मासिक

मानव मन्दिर

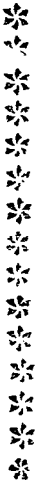

संरक्षक :

परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जो महाराज

सम्पादक

सेठ दुर्गादास जी

२	मई १९७५	संख्या १

सम्पादकीय

'विदेह मुक्त'

शरीर में रहते हुए जीवन यात्रा मुक्त अवस्था में रहकर सम्पूर्ण करना ही विदेह मुक्ति है। मुक्त अवस्था में अपने जीवन को रखना है। जीवन मुक्त अवस्था और विदेह मुक्त एक ही अवस्था के दो नाम हैं। प्रश्न है कि किस बात से जीवन मुक्त हो जाय? विदेह मुक्त महापुरुष के क्या लक्षण हैं? इनका जीवन इस संसार में कैसा है?

मुक्त कहते हैं छुटकारे को। किसी वस्तु से अपना पीछा छुड़ा लेना, उस वस्तु से छुटकारा पाना है। इस संसार में कौन सी वस्तु है जिससे महा-पुरुष छुटकारा पाना चाहते हैं?

पिता पुत्र से छुटकारा चाहता है क्योंकि वह दुष्ट है और आज्ञाकारी नहीं है। पति अपनी पत्नी

से छुटकारा चाहता है क्योंकि वह आचार हीन है। भाई भाई से छुटकारा चाहता है क्योंकि उसने इसके हक पर अधिकार जमा रक्खा है। जो बलहीन है अत्याचारी से छुटकारा मांगता है। किसान हिंसक पशुओं से छुटकारा चाहता है क्योंकि वे उसके पशुओं को मार डालते हैं। खेती बाड़ी करने वाले अकाल से छुटकारा चाहते हैं। मछलियां मगरमच्छ से छुटकारा चाहती हैं। जंगली पशु शेर से छुटकारा चाहते हैं। मुसाफिर थक कर यात्रा से छटकारा चाहता है।

इस संसार में सुख भी है तो दुख भी हैं। सेहत के साथ बीमारी है। धनी हैं तो निर्धन भी हैं। धूप के साथ छाया भी है। प्रकाश के साथ अन्धकार हैं। दिन हैं तो रात है। जो अमीर हैं धनी है बाहर से सुखी दिखाई देते हैं, वह अशान्ति से छुटकारा चाहते हैं। इस संसार में प्रत्येक प्राणी किसी न किसी वस्तु से छुटकारा चाहता है क्योंकि वह सुख खोजता है, आनन्द चाहता है और शान्ति चाहता है। अनुभव सिद्ध करता है कि "मन के जीते जीत

हैं।" सुख, आनन्द और शान्ति मन पर और ज्ञान पर निर्भर है। यदि मन को ऐसे संस्कार और विचार दिए जाएं कि वह दुख को दुख और सुख को सुख अनुभव न करे तभी मन शान्त हो सकता है।

महाराजा जनक विदेह मुक्त कहलवाए हैं। इनके गुरु अष्टाबक्र जी थे। महाराजा चाहते थे कि घोड़े पर सवारी के समय ही कोई इन्हें ज्ञान दे देवें। अष्टावक्र जी आए। उन्होंने कहा कि मैं तुमको इतने थोड़े समय में ज्ञान दूंगा। महाराजा मान गए। अष्टाबक्र जो ने ज्ञान प्रदान करने से पहले, गुरु दक्षिणा मांगी। उन्होंने पहले राज्य मांगा जो दे दिया गया। फिर उन्होने महाराजा से कहा कि मुझे शरीर भी दे दो। महाराज सोचने लगे, कि यदि मैंने शरीर दे दिया तो फिर हिल नहीं सकूंगा। उसने शरीर भी दे दिया। गतिहीन पड़ा रहा फिर अष्टाबक्र जी ने कहा अपना मन भी मुझे दे दो। महाराजा ने सोचा कि यदि मैंने मन दे दिया तो मैं सोच-बिचार नहीं कर सकूंगा। मगर वह अधिकारी थे, ज्ञान के इच्छुक थे इसलिए महाराजा ने

कहा "मन दिया"। ऐसा कहना था कि महाराजा की समाधी लग गई। शरीर गतिहीन हो गया। मन लोप हो गया। ज्ञान का अनुभव हो गया। प्रकाश के दर्शन किए। शब्द में लय रहे। लेकिन गुरु ने इनकी परीक्षा लेनी चाही। सारा नगर खूब सजाया गया। रागरंग की सभाएं स्थान २ पर लग गई महाराजा घोड़े पर सवार थे। उनके हाथ पर दूध का भरा हुआ कटोरा रख दिया गया। आदेश सिला कि जाओ शहर की सैर कर आओ पर दूध गिरने न पाए। महाराजा मे सारे शहर को घूम कर देखा। लौटने पर गुरुदेब ने पूछा। क्या देखा? उत्तर मिला कुछ नहीं। क्यों? मुझे ध्यान था कि दूध न गिर जाय। इसलिए कटोरे की ओर ध्यान था। न शहर की सजावट देखी और न रागरंग की सभाएं नजर आई।

सबसे बडा दुख जन्म मरण का इस संसार में है। कोई कोई महापुरुष इस दुख का अनुभव करते हैं और आवागमन से छुटकारा चाहते हैं। ऐसे महापुरुषों की लगन दाता से लगी रहती है। वह

इस संसार में रहते हुए भी सांसारिक बन्धनों से मुक्त रहते हैं। जैसे महाराजा जनक शहर की सैर तो कर आए लेकिन ध्यान कटोरे मैं था। ऐसे महा-पुरुष 'विदेह मुक्त' कहलाते हैं। कबीर साहब का कथन है—

जापर कृपा आदि कर्ता की, वह यह न्यामत पाए।

ऐसे महापुरुषों के चरणों में मैं प्रणाम करता हूं।

श्री दुर्गादास जी
चण्डीगढ़

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल
बाबा फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक १६ जनवरी १६७५

मासिक सत्संग

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला । धन्य उदार सु सहज कृपाला ।।
तुम्हारी दया कटी जम फांसी । तुम्हरी कृपा अविद्या नासी ।।
जढ़ चेतन का बन्ध कटाना । सकल उपाधी भरम हटाना ।।
अब नहीं व्यापे काल न माया । अब मैं रहूं न जग उरझाया ।।
जीवन मुक्ति दशा चित लाऊं । जल में कमल समान रहाऊं ।।
कर्म अकर्म ज्ञान अज्ञाना । द्वन्द अवस्था से विलगाना ।।
चेतन घन आनन्द घन बासी । घन आनन्द न पास सुपासी ।।
जीवन में विदेह गति पाई । जनक राज की बजी बधाई ।।

गुरु मिले सीतल भया, दूर भया उत्पात ।
राधास्वामी की दया, काल करे नहीं घात ।।

राधास्वामी ! मैं एक दृश्य द्वारा सन १६०५ में

हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत जी महाराज के चरण कमलों में गया था। उन्होंने मुझे सन्तमत या राधास्वामी मत दिया था। सन्तमत की बाणियों में सबका खण्डन था और दूसरे मैं सत्संगियों की आश्चर्यजनक बातें सुना करता था इसलिए मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इसलिए अपने कर्म भोग बस आप लोगों को यह बताना चाहता हूं कि मुझे गुरुमत में आने से क्या मिला ? मुझे वह मिला जो इस शब्द में वर्णन किया गया है। लोग यह समझते हैं कि हम केवल अभ्यास करेंगे और समाधी में रहेंगे तो हमको जीवनमुक्त या विदेह गति मिल जाएगी। यह बिल-कुल गलत है। सन्तमत का. सनातन धर्म का, जैनियों का या बुद्धमत वालों का अन्तिम ध्येय जीवन मुक्त अवस्था या विदेह गति है ताकि इस जन्म में हमको चिन्ता फिकर गम या कोई कल्पना न सताए। इनका न पैदा होना या इनसे दुखी या सुखी न होना ही मेरी समझ में जीवनमुक्त या विदेह गति है।

तुम लोग आए हो। मैं अपनी आत्मा से पूछता

हूं कि तुमको जोननमुक्त अवस्था कैसे मिली ? गो मैं अभी तक गिर जाता हूं मगर कब ? जब गुरु ज्ञान मेरे मस्तिष्क में नहीं रहता । संसार यह समझता है कि जब तक हमारे अन्तर में गुरुस्वरूप प्रकट होता है या गुरु हमारे अन्तर में है हम गिरेंगे नहीं लेकिन असलियत क्या है ? सुनो । हरएक आदमी के अन्तर जो विचार भाव, दृश्य, रूप और रंग पैदा होते हैं यह क्या हैं ? जिस प्रकार की उसकी वासनाएं और इच्छाएं उसके मस्तिष्क में हैं या वासनाओं के संस्कार उनके मस्तिष्क पर पड़े हुए हैं वही उसके स्वप्न या समाधी में उसके सामने अनेक शक्लें बनाकर आते हैं । जीव के अपने ही विश्वास ओर वासना के जनुसार किसी के अन्तर बाबे फकीर का रूप प्रकट होता है किसी के अन्तर राम का, किसी के अन्तर कृष्ण का और किसी के अन्तर किसी गुरु का या देवी देवते का रूप प्रकट होता है । न बाबा फकीर किसी के अंतर जाता है न कोई और गुरु किसी अन्तर प्रकट होता है । यह सब तुम्हारे विचार अपनी ही वासनाएं और अपने ही विश्वास का फल है । जो लोग केवल इस विचार से ही अभ्यास करते हैं कि उनको मुक्ति

मिल जाए वह जीवनमुक्त अवस्था को तो क्या प्राप्त करेंगे वह तो उल्टा फंस जाते हैं उनके अन्तर जब गुरु का रूप प्रकट होता है और कोई बात कह देता है तो वह उसको सत मान लेते हैं जैसे कि परसों समाचार पत्र में पढ़ा कि बाल योगेश्वर का कोई अमेरिकन चेला है उसने तीन आदमी मार दिये। जब पकड़ा गया तो उसने बताया कि सत्संग में उसके साथ लोगों ने बुरा बरताव किया और उसको सत्संग में आने से रोक दिया। फिर उसने बताया कि बाल योगेश्वर का रूप उसके अन्तर प्रकट हुआ और कहा कि अमुक अमुक जो बारह आदमी बुरे हैं उनको मार दो इसलिए यह तीन आदमी मारे हैं और शेष नौ आदमियों को भी मारूंगा।

ऐसे ही जिनके अन्तर किसी का रूप प्रकट होता है वह उनकी वासनाओं के अनुसार उनको कोई बात कहता है या गाईड करता है। मैं राम और कृष्ण का ध्यान किया करता था। राम मेरे सामने रहता था और कृष्ण मेरे सामने वंशी बजाया करता था।

मैं गुरुमत में या सन्तमत में कैसे आया ? एक बार मैं जा रहा था और श्री कृष्ण जी मेरे आगे वंसरी बजाते हुए जा रहे थे रास्ते में कुछ गोबर पड़ा था। श्री कृष्ण जी ने मुझे कहा कि यह गोबर खा जाओ। मैंने खा लिया। जब में अपने मकान पर पहुंचा तो होश आई। मुझे विचार आया कि आज तक किसी गुरु, पीर, पैगम्बर या अवतार ने अपने किसी भक्त को यह नहीं कहा कि तुम गोबर खाओ। ब्राह्मण होने के नाते रामायण से यह विचार मुझे मिला था—

नाना भान्ति राम अवतारा,
रामायण शत कोट अपारा।

इससिए विचार उठा कि मेरे लिए भी अवश्य मनुष्य चोले में राम आया हुआ होगा उसको मिलने के लिए मैं बहुत रोया। २४ घण्टे लगातार रोने के बाद एक दृश्य मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि जी महाराज के चरण कमलों में ले गया। गुरु की महिमा है ओर गुरु दयाल होता है :—

धन्य धन्य सतगुरु दयाला, धन्य उदार सुसहज कृपाला

वह कृपाल दयाल और उदारचित्त होता है। वह क्या करता है ? मानव की सुरत जो नाना प्रकार के बन्धनों में फंसी हुई है उनसे इनको मुक्त करा देता है कैसे ? अपने सत्सगों के वचनों से। मगर क्योंकि सब आदमी उन सूक्ष्म बचनों को समझ नहीं सकते इसलिए गुरु अभ्यास करा कर उसको अनुभव करा देता है कि वह गुरु की बात को समझने योग्य हो जाए इसलिए जो लोग केवल अभ्यास पर ही बल देते हैं यदि उनको कोई पूर्ण गुरु नहीं मिला तो वह आजाद नहीं हो सकते। मैंने आपको अपना अनुभव भी बता दिया और बालयोगेश्वर के बारे में भीबता दिया किसी के अन्तर देवी प्रकट हुई, किसी के अन्तर देवता प्रकट हुआ और किसी के अन्तर कोई प्रकट हुआ। किसी ने अपने ही परिवार को मारा और किसी ने किसी को मारा। इसलिए गुरु को महत्ता है। मैंने अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है। आप लोग आए हैं मैं अपनी जिम्मेदारी समझता हूं और अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं और तुमको अपने अनुभव के आधार पर यह बताना चाहता हूं कि तुम जीवनमुक्त अवस्था में कैसे जा सकते हो। सुनो। पहली बात तो

यह है कि संसार से वैराग्य होना चाहिए लेकिन वैराग्य तो सबको हो नहीं सकता। क्योंकि तुम बाल बच्चों वाले हो और तुमको धन सम्पत्ति से प्यार है। बच्चे मर जाते हैं, घाटा पड़ जाता है और कई तरह की हानी हो जाती है किसी की स्त्री मर जाती है किसी स्त्री का पति मर जाता है। इससे बचाव कैसे हो सकता है? अब मुझे भी कष्ट है कोई न कोई बीमारी लगी रहती है लेकिन मुझे यह विश्वास हो चुका है कि जो कुछ हमारे साथ होता है वह तो हमारे प्रालब्ध कर्मों का फल है या इस जन्म के कर्मों का फल है या और यदि तुम कर्म को नहीं मानते हो तो फिर यह मानना पड़ेगा कि इस संसार को बनाने वाली जो शक्ति है वह जालम है। साल दो साल का एक बच्चा अन्धा हो जाता है या उसको कोई बीमारी हो जाती है कि उसका शरीर नकारा हो जाता है और वह बच्चा सारो आयु दुख उठाता है। उस साल दो साल के बच्चे ने इस जन्म में तो कोई बुरा कर्म किया नहीं इसलिए यह मानना पड़ेगा कि यह उसके प्रालब्ध कर्म का फल है और जो कर्म को नहीं मानते वह यह कहेगे कि संसार को पैदा

करने वाला जालम है। तो फिर इस दुख से या सुख से छुटकारा कैसे हो? केवल इस एक विचार से कि यह सब कुछ हमारे अपने ही कर्मों का फल है। यदि यह विश्वास हो जाए तो फिर दुख कष्ट तो आता ही रहेगा मगर तुम उसको कर्म भोग समझ कर ज्यादा हाए २ नहीं करोगे। मुझे इस विचार से शक्ति मिले। यही मुसलमान कहते हैं कि खुदा की मरजी है जिसको चाहे शाह बना दे और जिसको चाहे गदा बना दे।

गुरु करता क्या है? जीव को समझ ज्ञान और विवेक देता है, इसलिए गुरु की महिमा है। गुरु तुमको तुम्हारी वासनाओं के अनुसार और तुम्हारी प्रकृति को देख कर तुमको हिदायत करता है। उसके उपदेश पर चलना ही गुरु भक्ति है। तुम लोग यह समझते हो कि बाबे फकीर को रुपए दे दो या मानवता मन्दिर में दो कमरे बनबा दो इससे तुम तर जाओगे। यदि रुपया देने से या मन्दिर बनवा देने से कोई जीवनमुक्त हो सकता तो सबके सब धनी लोग जीवनमुक्त हो जाते। यह ठीक है

कि तुम लोग जो रुपया देते हो इससे गरीबों की सहायता होती है और इसका फल तुमको मिलता है। मैं यह स्पष्ट वर्णन इसलिए करता हूं कि यदि मैं परदा रख कर तुम लोगों से चार पैसे लेता हूं तो मैं दोषी हूं फिर मैं दयाल कृपाल नहीं हूं बल्कि मैं स्वार्थी और मतलबी हूं। यदि उटपटांग बातें करके मन्दिर के लिए या अपने लिए किसी से कुछ लूंगा तो इस बुरे कर्म का फल मुझे भुगतना पड़ेगा।

मैंने यदि अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहा है तो मैं समय के सन्त सत्गुरु का कर्तव्य भी पूरा कर रहा हूं वह सच्चा ज्ञान जो मैंने अपने जीवन में प्राप्त किया है वह बिना किसी बदले के तुम लोगों को अपने लेख और भाषण के द्वारा दे रहा हूं। तुम लोग सुमिरन, ध्यान और भजन करते हो यदि तुम्हारा हृदय शुद्ध है और तुमको सच्चाई की इच्छा है तो जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होगा वह तुमको सच्चाई की ओर ले जाएगा। यदि तुम्हारा हृदय शुद्ध नहीं है तो वह रूप तुमको पथभ्रष्ट

भी कर सकता है। मैंने अभी आपको उदाहरण दिए हैं जैसे मैंने कृष्ण जी के रूप के कहने पर गोबर खा लिया फिर सोच आई कि ऐसा तो कहीं भी लिखा हुआ नहीं है। उस समय तो मुझको सन्तमत का पता नहीं था क्योंकि रामायण से यह संस्कार मिला हुआ था कि वह राम इस संसार में आता है इसलिए मैं रोया और एक दृश्य आया। वह दृश्य मेरी अपनी ही सच्चाई की तलाश का दृश्य था। पहले मैं भी यह समझता था कि हजूर दाता दयाल जी महाराज मेरे अन्तर प्रकट होते हैं लेकिन अब जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, उनके काम करता है, और मैं नहीं होता तो मझे समझ आ गई कि हजूर दाता दयाल महाराज मेरे अन्तर नहीं आते थे वह मेरा अपना ही सच्चाई का आत्मा था। इसलिए मैं कहा करता हूं कि ऐ मानव ! तू अपने आपको धोखा मत दे और न ही अपने स्वार्थ के लिए किसी को धोखा दे। तू चाहे बाबे फकीर का चेला बन जा चाहे हजूर सावन सिंह जो महाराज का चेला बन जा चाहे किसी और का चेला बन जा लेकिन तुम्हारे सामने वही

रंग रूप आएंगे जो तुम्हारे मस्तिष्क में छुपे हुए हैं। मुझे न राधास्वामी मत का पता था और न हजूर दाता दयाल जी महाराज का पता था क्योंकि मुझे सच्चाई की खोज थी और मालिक को मिलने की इच्छा थी इसलिए प्रकृति ने मुझे वहां पहुंचा दिया जहां से मेरा काम बनता था। इसलिए ऐ मानव ! अपनी नियत को साफ रख। जो कुछ तुम चाहते हो वह तुमको अवश्य मिलेगा, अवश्य मिलेगा, अवश्य मिलेगा शर्त यह है कि उसके लिए तुम्हारी नोयत साफ है और सच्ची लगन है, कोई शक्ति उसको रोक नहीं सकती। मैं क्योंकि सच्चा ज्ञान देता हूं इसलिए मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं।

धन्य धन्य सत्गुरु दयाला.
धन्य उदार सु सहज किरपाला

मैं उदार चित्त हूं। उदार चित्त वह होता है जो कंजूस न हो। मैंने जीवन में जो कुछ अनुभव किया वह बिना किसी बदले के आप लोगों को बता रहा हूं। इन गरुओं ने क्या किया ? यदि उनके रूप से काम बन गया तो वह Credit ले गए और यदि न बना तो कह दिया कि वह तो काल का रूप था। ऐसी

बातें कह कर उन्होंने संसार की धोखा दिया है। देखो ! में संसार को शपथपूर्वक कहता हूं कि बाहर की कोई शक्ति न राम, न कृष्ण, न कोई गुरु, और न कोई देवी देवता तुम्हारे अन्तर आता है बल्कि तुम्हारे हृदय की सच्चाई के अनुसार कोई न कोई रूप जिसके द्वारा तुम्हारा काम बनना होता है, प्रकट हो कर तुम्हारा काम कर जाएगा। इस सच्चाई को परदे में रखकर इन महात्माओं ने कितना अनर्थ किया कि तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आ कर तुमको ले जाएगा। इस परदे के कारण इन डेरों, धामों, मन्दिरों मसजिदों और गुरुद्वारों में लाखों रुपया जमा हुआ और इन महात्माओ ने अपनी सम्पत्तिएं बनाई और गद्दिएं अपनी सन्तान को दे गए और पब्लिक के पैसे का दुरुपयोग किया। कोई गुरु किसी को उसके अन्तिम समय पर लेने नहीं जाता और मेरे सामने यह सब महात्मा मानते हैं लेकिन पब्लिक प्लेटफार्म पर नहीं बताते क्योंकि पैसा नहीं आता।

मैं अपने आप को समय का सन्त सतगुरु कहता हूं, कहता ही नहीं मैं हूं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे सम्बन्ध में लिखा है

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुर के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई. नाम दान दे दानी॥

जीव निबल हैं, कमजोर हैं और सहारा चाहते हैं। किसी को क्या कहूं मैं इतना ऊंचा चढ़ जाने के बाद भी जब कभी शारीरिक कष्ट हो जाता है. तो नानी याद आती है और मैं सहारा चाहता हूं फिर हजूर दाता दयाल जी महाराज का रूप बनाता हूं और प्रार्थना करता हूं। यह अपनी बाबत बता रहा हूं दूसरों का मुझे पता नहीं। मुझे सिवाए शारीरिक कष्ट के जो कभी २ हो जाता है और कोई दुख नहीं। पैसा आ जाता है, भोजन की चिन्ता नहीं। यदि मुझे भोजन की चिन्ता होती और फिर मैं सच्चा हो कर रहता तब मेरी बहादुरी थी। यह तो हजूर दाता दथाल जी महाराज की दया है कि मुझे बचा दिया।

जब हम पर कोई दुख या विपत्ति आती है तो हम प्रार्थना करने के लिए विवश हैं। करो और सच्चे दिल से प्रार्थना करो, वह देता है, वह सुनता

है और कोई न कोई साधन बता देता है। मैं सत्य प्रिय व्यक्ति हूं, सोचा करता हूं कि मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा। अब आप देखो कि मालिक ने मेरा किस तरह प्रबन्ध कर दिया है, मैं बहुत प्रसन्न हूं। इसलिए सच्चे बनकर अपने इष्ट के आगे प्रार्थना किया करो उसको मानो। यह मत समझो कि वह होशियारपुर में या व्यास में या किसी और जगह रहता है वह हर समय तुम्हारे अन्तर रहता है और हर समय तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार है शर्त यह है तुम सच्चे बनकर उससे मांगो।

धन्य धन्य सतगुरु दयाला
धन्य उदार सु सहज कृपाला।
तुम्हरी दया कटी जम फांसी,
तुम्हरी कृपा अविद्या नासी॥

सत्गुरु की दया क्या है और सत्गुरु की दया से मेरी यम की फांसी कैसे कटी ? यम है ख़ारज करना। हमारे संकल्प और विचार जो निकलते रहते हैं उनका नाम है यम। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट हो कर उनके काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास

हो गया कि मेरे या तुम्हारे अन्तर जो रूप प्रकट होता है वह काल है, वह तुम्हारा अपना ही मन है। तुम लोग किस भ्रम में हो ? मैं तुम लोगों को अज्ञान में रखकर या मूर्ख बनाकर अपने पीछे न ही लगाना चाहता मन्दिर चले या न चले मुझे इस बात की चिन्ता नहीं। मैं अपने हृदय को सच्चा रखना चाहता हूं और तुम लोगों को सच्चा ज्ञान दिए जा रहा हूं। जो रूप तुम्हारे अन्तर में प्रकट होता है उसके साथ बाते मत करो, कई बार वह बाते ठीक भी हो जाती हैं बहुधा गलत भी हो सकती हैं जैसे बाल योगेश्वर के चेले ने तीन हत्याए कर दीं या किसी के अन्तर देवी प्रकट हुई उसने अपने ही बाल बच्चे कत्ल कर दिए. यह भूल है, और भ्रम है इसीलिए राधास्वामी मत में या सन्तमत में पूर्ण गुरु की बड़ाई है। तुम उसको गुरु समझते हो जो तुम्हारे अन्तर में प्रकट होता है। वह गुरु नहीं है, तुम्हारे अन्तर तुम्हारी स्त्री या तुम्हारे लड़के का रूप भी आ जाता है वह क्या तुम्हारा गुरु है ? वह तो तुम्हारा अपना ही मन है और वही यमराज है। गुरु तो बाहर बैठा हुआ है इसलिए किसी पूर्ण

गुरु के सम्पर्क में रहो और उसको अपने दुख बताओ ताकि वह तुमको इन दुखों से बचने के लिए ठीक राय दे ।

तुम लोगों की दया मैं से यमराज के चक्र से निकल गया लेकिन यदि किसी समय ज्ञान नहीं रहता तो फंस भी जाता हूं, इसलिए गुरु के सत्संग से जो ज्ञान तुमको मिले उसको याद रखो और उस पर आचरण करो ताकि तुम मन के चक्र में न आओ । हो सकता है कि मैंने जो समझा है वह सारे का सारा गलत हो । क्या पता मेरे साथ कल क्या बीते, इसलिए किस बात का दावा करूं ? एक बात अवश्य है कि मैंने अपना सारा जीवन सच्चाई से गुजारा है हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना मुझे नहीं पता कि मैंने ठीक किया है या गलत किया हैं मगर जो कुछ किया बिलकुल साफ नीयत से किया है, कोई हेरा फेरी नहीं की । अपनी तरफ से जीवों की निबलता, अबलता और अज्ञान को दूर करने का यत्न करता रहता हूं । निबलता है शारीरिक कमजोरी । मैं जब बिमार हो

जाता हूं तो लाख यत्न करने पर भी मेरी सुरत नहीं चढ़ती। यदि शरीर को भूल जाऊं तो फिर तो चढ़ जाती है अन्यथा हजूर दाता दयाल जी महाराज का रूप बनाकर प्रार्थना करता रहता हूं। शायद दूसरे महात्माओं के साथ कुछ और बीतो हो इस बात का मुझे पता नहीं।

जड़ चेतन का बन्ध कटाना,
सकल उपाधी भरम हटाना।

अब मेरा जड़ और चेतन का भ्रम चला गया। चेतन क्या है? तुम्हारा प्रकाश स्वरूपी आत्मा। तुम प्रकाश स्वरूप हो। तुम कहां से आए हो? मां के पेट से। बाप के वीर्य का एक कीड़ा मां के गर्भ में चला गया उस समय न उसमें शरीर था, न ही मन था, उसमें शक्ति थी। जब शरीर बन गया और उसमें प्रकाश आ गया तो मन, बुद्ध, चित्त, अहंकार पैदा हो गए और इन्होंने प्रकृति के अनुसार अपना खेल आरम्भ कर दिया। अब यदि मेरे अन्तर कोई ऐसा वैसा विचार आता है तो मैं जानता हूं कि यह मेरा मन है मैं नहीं हूं क्योंकि मन और है और मैं और हूं। हमारे अन्तर में

जो विचार पैदा होते हैं यह हमारे बस में नहीं हैं क्योंकि जिस प्रकार की प्रकृति से हमारा मस्तिष्क बना है उस प्रकार के विचारों का हमारे मस्तिष्क में आना अनिवार्य है, न कोई उनको रोक सकता है और न ही कोई उनको बदल सकता है। अपनी प्रकृति के अनुसार सोचने और काम करने के लिए आदमी विवश है। मुझे यह समझ आ गई कि मैं न शरीर हूं, न मन हूं, न प्रकाश हूं और न शब्द हूं, मैं इन सबसे न्यारा हूं. जब यह ज्ञान भूल जाता हूं तो मेरी भी जड़ चेतन की ग्रन्थी बन जाती है और मैं भी फंस जाता हूं मगर जल्दी ही सम्भल जाता हूं क्योंकि मुझे यह ज्ञान हो गया है कि यह रूप रंग आदि सब माया है इनको सत न मानना ही जीवन मुक्त अवस्था है।

अब नहीं व्यापे काल न माया,
अब मैं रहूं न जग उरमाया।

जब यह ज्ञान हो जाता है तो फिर जो कुछ भी होता रहता है जीव उसकी चिन्ता नहीं करता। मैं इस लाईन पर चलता हूं लेकिन जब भूल जाता हूं

तो फंस जाता हूं मगर जल्दी ही होश आ जाती है तुम लोग गृहस्थी हो घरों में लड़ाई झगड़े होते रहते हैं जिसको यह समझ आ जाती है कि यह सब कुछ प्रकृति के अधीन है वह फिर दुखी नहीं होता।

जीवन मुक्त दशा चित लाऊं,
जल में कमल समान रहाऊं।

यह है अभ्यास का मतलब। जो आदमी सारा जीवन अभ्यास करते रहते हैं लेकिन जीवन में कोई पूर्ण गुरु उनको नहीं मिला उनको अभ्यास से कोई विशेष लाभ नहीं होता।

बिन सतसंग जो शब्द में पचते वह भी मूर्ख जान।

अभ्यास लक्ष्य स्थान नहीं है। अभ्यास से अपने रूप का साक्षातकार करने की आवश्यकता है। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मेरे अन्तर में जो रूप रंग पैदा होते हैं यह सब माया हैं तो मैं इन सबको छोड़ देता हूं, न सहस दल कमल की चिन्ता करता हूं, न त्रिकुटी की चिन्ता करता हूं, मैं सीधा ही शब्द और प्रकाश में जाता हूं और वहां उस वस्तु को खोज करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई

प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है। उसका मुझे अन्त नहीं मिलता। मैं अपना अनुभव कहता हूं शायद दूसरे सन्तों को कोई अंत मिला हो।

वह अकह, अपार, अगाध और अनामी है उसका कोई रूप नहीं मगर वह है सही। फिर सोचता हू कि जो वहां पहुंच जाता है क्या वह कुछ कर सकता है ? क्या वह किसी के दुख दूर कर सकता है ? क्या वह अपनी बीमारी को दूर कर सकता है ? नहीं। मैंने सन्तों की दशाएं देखीं। हजूर दाता दयाल जी महाराज की धाम उजड़ गई वह बहुत ऊंचे चढ़े हुए थे मगर अपनी धाम को उजड़ने से न बचा सके। हजूर बाबा सावन सिंह जी का जवान लड़का मर गया मगर वह कुछ न कर सके, उनकी अपनी टांग टूट गई थी। बहुत से सन्तों ने अपना अन्तिम आयु में महान कष्ट उठाए। मेरी अपनी क्या दशा हो यह भगवान जानता है। तो मैं इस परिणाम पर आया कि उस ऊंची अवस्था में पहुंचने पर भी कोई सन्त कुछ

नहीं कर सकता। केवल अंतर में आनन्द लेता है और उसको ज्ञान हो जाता हैं वह बाहर के अच्छे और बुरे प्रभावों से प्रभावित नहीं होता। इसलिए मैं इस परिणाम पर आया हूं कि मैं कौन हूं। मैं चेतन का एक बुलबुला हूं उसकी मौज से यह शरीर बना और जब उसकी मौज होगी वह इसको समाप्त कर देगा। इस ज्ञान से आदमी विदेह गति में आ जाता है। किस बात का अहंकार करूं? जो कुछ मुझे या किसी दूसरे को मिलता है वह अपने ही कर्म का फल मिलता है और या मालिक की दया है। यदि यह बात समझ में आ जाए तो फिर संसार में रहता हुआ आदमी दुखी नहीं होता। अपने कर्मानुसार जितना किसी ने लेना है वहले लेता है। और जितना देना होता है दे देता है। कोई बाप बन के लेता है, कोई बेटा बन के लेता है, कोई भाई बन के लेता है, कोई गुरु बनके लेता है, कीई चेला बन के लेता है और कोई डाकू बन के लेता है। यह सब कर्म का फल है और लेने देने का सम्बन्ध है।

जैसा ख्याल वैसा हाल :-

हमारे यहाँ रिवाज है कि विवाह के समय

लड़के और लड़की का एक दूसरे को मुंह दिखाते हैं और उनसे कह देते हैं कि एक बार एक दूसरे का नाम ले लो और फिर सारा जीवन नाम नहीं लोगे। मेरा जब दूसरा विवाह हुआ तो मुझे ज्ञात हुआ कि मेरी स्त्री का नाम ही क्रोधू है तो यह क्रोध ही करेगी और मेरी और इसकी अनबन बनी रहेंगी। विवाह के बाद मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज को लिखा। उन्होंने मुझे यह उत्तर दिया।

भाग्यवती जब भाग में आई,
अब भागन में कौन भलाई।
वीर समान धर्म को पाल,
मौज करेगी आप सम्भाल॥

उन्होंने उसका नाम भाग्यवती रख दिया और मेरे विचार को बदल दिया। कर्म का सम्बन्ध विचार से है और मन से है। इसलिए यदि घर में अनबन भी है तो उसको कर्म का फल समझो इससे मन को शान्ति मिलेगी। सारा संसार विचार का है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे पत्र के उत्तर में क्या लिखा? मेरे विचार को बदल दिया। मैं क्योंकि एक बार एक वैश्या के पास गया, तीन बार रम पी,

और छः महीने मांस खाया इसलिए मैं अपने आप को पापी समझता था। हजूर दाता दयाल जी महाराज के दरबार में गया उन्होंने मुझे शरण दी और मेरे विचार को बदला। कैसे ? कहा कि तुम फकीरों में चान्द बनोगे। मेरे छोटे भाई का नाम ढ़ेरूमल से सुरेन्द्र नाथ रख दिया और कहा कि तुम देवताओं के राजा इन्द्र के भी नाथ हो और उसको कुरसी पर बैठा दिया। इसलिए किसी को कभी भी बुरा या कमजोर विचार मत दो। बच्चों को मत कोसो। उनको पागल या मूर्ख मत कहो। सदा उनको उत्साह दो। अच्छे विचार देने से जीवन बदल जाता है। यह तुमको जोवन अच्छा बनाने का गुर बता रहा हूं, इस पर यदि आचरण करोगे तो सुखी रहोगे। सदा स्वयं आशावादो विचार रखो और दूसरों को आशावादी विचार दो यदि स्त्री ने कोई भूल की और तुम उससे नाराज हुए तो घर में झगड़ा हो गया इसलिए घर में शान्ति रखने के लिए युक्ति और समझ से काम लो और घर का अच्छी तरह सुधार करो। क्रोध से कभी सुधार नहीं होता सदा प्रेम से सुधार होता है। हम लोग

घरेलू झगड़ों के कारण दुखी हैं, परमार्थ के लिए दुखी नहीं हैं।

कर्म अकर्म ज्ञान अज्ञाना.
द्वन्द अवस्था में विलगाना।

कर्म क्या था ? कि मैं भी जप तप करता हूं, मैं अभ्यास करता हूं, मैं नेकी करता हूं, मैं गुरु हूं या मैं सत्संग कराता हू आदि आदि। इन बातों से आदमी को अहंकार आ जाता है। जब से मुझे यह समझ आई कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। मेरे बस में कुछ नहीं है जो उसकी मौज है वह कराए, इस ज्ञान से मुझ पर किसी कर्म का कोई फल नहीं है।

संसार में मैं पहला सन्त हूं जिसने सच्चाई को नंगा कर दिया और जिस परदे के कारण से यह गुरु लोग गृहस्थियों से धन बटोरते हैं उस भेद को खोल दिया। मैंने सच्चाई से ही काम आरम्भ किया है। ये गुरु लोग यदि सच्चाई से काम करें तो इनके डेरे कैसे चलें ? मुझे विश्वास हो गया है कि यह जो कुछ अन्तर और बाहर दिखाई पड़ता है यह सब माया है, मेरा इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है, मैं

इन से अलग हूं, और सुख रूप हूं। आप सत्संगियों की दया से मुझे यह ज्ञान हुआ इसलिए मैं सच्चे दिल से सत्संगियों की सेवा करता हूं और मैं यह सेवा हजूर दाता दयाल जी महाराज की सेवा समझ के करता हूं। मैं आप लोगों को अपने पीछे नहीं लगाना चाहता। मेरी बात को समझो। प्रसन्न रहो और अपने जीवन को बनाओ। हो सके तो किसी दुखिए की सहायता करो, किसी का भला करो, किसी गरीब की सहायता करो और परोपकार करो। सिवाए इसके तुम्हारे साथ कुछ नहीं जाएगा। प्रकृति ने तुम लोगों की सेवा करने और अपना जीवन बनाने का अवसर दिया है इस अवसर को हाथ से मत जाने दो।

चेतन घन आनन्द घन वासी.
घन आनन्द न पास सुपासी।

वह गुरु प्रकाश और शब्द स्वरूपी है उसने तुमको ज्ञान दिया कि जो कुछ मैं हूं वही तुम हो, दोनों में कोई अन्तर नहीं, केवल इतना अन्तर है कि गुरु को भ्रम नहीं, चेले को भ्रम है। मेरी यह इच्छा

है कि तुम सब लोग सत लोक पहुंच जाओ। आखिर एक दिन पहुंचना ही है। यदि अन्त समय पर तुमको मेरा यह ज्ञान याद रह गया और प्रकाश और शब्द का जो विचार मैं देता रहता हूं अन्तिम समय पर जहां और विचार तुम्हारे सामने आएंगे यह भी आ गया तो तुम माया के चक्र से निकल जाओगे।

स्वामी जी महाराज ने माया संवाद में जहां सबका खण्डन किया है वहां माया स्वामी जी से कहती है कि महाराज ! आपने तो जीवों के लिए मार्ग बिलकुल साफ कर दिया, अब मैं क्या करूंगी ? तो स्वामी जी महाराज उत्तर देते हैं कि सुन माया ! मैंने तेरे साथ छल बल तोड़ दिए अब तू मेरे जोव को नहीं ले जा सकती, वह सीधा सतलोक को जाएगा।

मैं जब यह वाणिएं पढ़ा करता था तो उस समय मुझे इनकी समझ नहीं आती थी अब समझ आई है कि मैं यह जो ज्ञान तुमको दे रहा हूं यदि यह तुमको अन्तिम समय पर याद रहा तो जो भी रूप तुम्हारे सामने आएगा तुम उसको काट दोगे

और आगे निकल जाओगे इसलिए तुम तर जाओगे। तभी तो मैं कहता हूं कि जो आदमी ध्यान से मेरा सत्संग सुनेगा मैं उसको सतलोक पहुंचा दूंगा। मेरी सेवा यही है कि मेरे सत्संग में बैठकर ध्यान से बचन सुनो, गुनो और मनन करो। धन देना भी सेवा है मगर यह व्यवहारिक सेवा है। इसका भी तुमको फल मिलता है क्योंकि इस धन से बीमारों और गरीबों की सेवा होती है और सतज्ञान का प्रचार होता है मगर मैं तुम्हारी आंखों में मिट्टी डालकर और छल कपट से धन नहीं लेना चाहता। यदि गुरु की बात की समझ आ जाए तो बार २ गुरु के पास आने की आवश्यकता बाकी नहीं रहतीं और फिर आपका अमल बाकी रह जाता है। फिर ससार के व्यवहार के लिए जब इच्छा हो गुरु के चरणों में जाओ।

जीवन में बिदेह गति पाई,
जनक राज की बजी बधाई।

जनक महाराज बाल बच्चेदार थे। अपने जीवन में सारे काम करते थे मगर अपना कर्तव्य समझ कर और उसमें फंसते नहीं थे। सब धर्मों का यही

लक्ष्य है लेकिन आजकल इन धर्मों ने रोचक भयानक बातें गढ़ कर संसार को अपने पीछे लगाया हुआ है। परमार्थ साधन और अमल का विषय है बातों का विषय नहीं है।

गुरु मिले सीतल भ्या, दूर भ्या उत्पात।
राधास्वामी की दया, काल करे नहीं घात।

गुरु से क्या मिला ? तुम समझते हो कि गुरु धन देता है। यह गलत है। क्यों ? मेरे पास से लगभग सौ स्त्रीएं प्रसाद ले गईं और उनके लड़के हो गए मगर यह उनका विश्वास था यदि मेरे प्रसाद में इतनी शक्ति होती तो मेरी लड़की जिसके विवाह को लगभग बीस साल हो गए हैं और कोई बच्चा नहीं है, मैंने उसको कई बार प्रसाद दिया है उसके भी बच्चा हो जाता। यह सब तुम्हारे अपने विश्वास का फल है कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता लेकिन तुम अपनी श्रद्धा और विश्वास से जो चाहो ले सकते हो। कई सन्तो और महात्माओं के लड़कों और रिश्तेदारों की आदतें बिगड़ गईं, चरित्र बिगड़ गए और विचारों में अन्तर पैदा हो गया.

यदि उन सन्तों और महात्माओं में शक्ति होती तो वह उनको ठीक कर लेते। इसलिए कोई कुछ नहीं कर सकता। तुमने स्वयं अपने आप को ठीक करना है और ठीक वह हो सकता है जो अपने आपको ठीक करना चाहता है दूसरा नहीं।

तुम लोग आए हो। मैंने कोई परदा नहीं रखा और बिलकुल सच्चाई वर्णन की है। मेरी समझ में यह बात आई है कि ऐ मानव! अपनी नीयत साफ रख। अपने निजी स्वार्थ के लिए कोई हेरा फेरी मत कर। किसी दुखिए और गरीब की सहायता कर। नेक कमाई कर और अपना कर्तव्य समझ के सांसारिक काम काज कर। फिर यदि हो सके तो राम २ कर वरना बेशक न कर।

सबको राधास्वामी

— — —

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल
पं फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक २० जनवरी १९७५

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला,
धन्य उदार सुसहज कृपाला।
तुमरी दया कटी जम फांसी,
तुम्हरी कृपा अविद्या नासी॥

राधास्वामी ! कल भी मैंने इस शब्द पर अपना अनुभव कहा था आज फिर यह शब्द सुना, सोचता हूं मेरे अन्तर वह कौन सी वस्तु है जिसकी फांसी कटी और जिसको विदेह आई या दूसरे शब्दों में मेरे अन्तर वह कौन सी वस्तु है जो सब कुछ अनुभव करती है। जब यह फकीर नहीं था तो वह वस्तु जो मेरे अन्तर में यह समझती है कि मेरे काल कर्म की फांसी कट गई वह कहां से आई और कहां जाएगी ? सन्त या बेदान्ती यह कहते हैं कि वह अपनी ही

ज़ात है या अपना ही आप है लेकिन यदि वह अपना ही आप है या अपनी ही जात है तो फिर वह आखिर है क्या ? उसके बारे न जबान से कुछ कह सकता हूं और न कुछ सोच सकता हूं मगर उस अवस्था में रहकर उसको अनुभव करता हूं जब इस अवस्था में ठहर जाता हूं तब उसका अनुभव होता है कि वह कुछ है मगर क्या है या क्या नहीं यह वह नहीं जान सकता। वह केवल इतना ही समझता है कि वह कुछ है। क्योंकि मैं नहीं जान सकता इसलिए मैं ऐसा कहता हूं। फिर मेरे दिल में यह विचार आता है कि फकीर ! सारा जीवन सन्तमत में खोज करने के बाद तुमको क्या मिला ? मैं अपने आप से नहीं बल्कि सब वेदान्तियों से यह प्रश्न करता हूं कि तुम लोग बताओ कि वह क्या वस्तु है जो तुम्हारे अंतर में यह सोचती है और अनुभव करती है या कहती है कि गुरु की दया से मेरे फन्द कट गए। मैंने सारा अपना जीवन इसी खोज में गुजारा। पहले तो मैं मन के चक्र में था। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दया की और मेरे जीवन को अनुभव से गुजारा।

कल जिला मिरजापुर (यू. पी) से दो आदमी

आए । दो तीन दिन यहां रहे और जातो बार कपढ़े जूते और रुपए दे गए । अब मैं सोचता हूं कि क्यों फकीर ! क्या तू ने उनको कुछ दिया या कोई मन्त्र पढ़ा या कोई जादू किया ? नहीं । मैंने कुछ नहीं दिया । कभी साल दो साल के बाद जब उस राज्य मैं जाता हूं तो जब वह सामने आते हैं तो उनकी हस्ती का एहसास होता है कि वह हैं । अब यदि उन कपड़ों या उस रुपए को मैं अपने प्रयोग में लाऊं तो क्या मैं दोषी नहीं हूं क्योंकि मेंने तो कुछ किया नहीं । मेंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा इसलिए कहता हूं कि वह जो मालिक है, वस बह है । उसका पता मेरे विचार में न किसी सन्त को मिला और न किसी परम सन्त को । हां जो कुछ उन्होने अनुभव किया वह अपनो वाणियों में लिख गए । तो मुझे शान्ति किस विचार से मिलती है ?

गुरु मिले सीतल भया, दूर भया उत्पात ।
राधास्वामी की दया, काल करे नहीं घात ।।

हो सकता है कि जो कुछ मैंने अनुभय किया है वह गलत हो मुझे किसी बात का दावा नहीं मगर

मैं इस वर्तमान महात्माओं और सन्तों से प्रश्न करना चाहता हूं कि आप लोग बताओ या कोई बताए कि वह वस्तु जो हमारे अन्तर मैं है और कहती है कि गुरु की दया से जीवनमुक्त अवस्था या विदेह गति मिली। वह क्या है ? क्या वह कुछ कर सकता है ? कहने को तो सब कह देते हैं कि यह निज रूप है। यदि निज रूप है तो है क्या ? यह ठीक है कि वह व्यान से बाहर है मगर वह है क्या ? मैंने क्या समझा। मैं नेयह समझा कि मैंने कुछ नहीं समझा। कुछ नहीं समझने की जो मस्तिष्क में अवस्था है मुझे वह प्राप्त हुई। जो अभी तक वह पूरी हालत आई नहीं मगर आ रही है। इसलिए अब किसको उपदेश करूं, किसका गुरु बनूं और किसका चेला बनूं ? क्या करूं और क्या न करूं ? मस्तिष्क फेल हो रहा है। जब होश में आता हूं तो अपने कर्म और अज्ञान के कारण से कुछ न कुछ बनकर काम करता हूं मगर मेरा यह काम करना भी मेरे वस में नहीं। शायद इसलिए कबीर साहिब ने कहा है कि—

एक कहूं तो है नहीं दूजा कहूं तो गार।
जैसा है तैसा रहे, कहैं कबीर विचार॥

मेरे दिल में केवल एक इच्छा बाकी है कि जो कुछ मैंने समझा है या जो मैं यह कहता हूं कि मैं कुछ नहीं समझा यह सब कुछ मेरे जीवन में मेरे शरीर मन और आत्मा की हस्ती के बन जाने से है। मेरी इच्छा यह है कि जब शरीर छूटे तो मैं बता सकूं कि वह वस्तु जो मेरे अन्तर में है आया उसका कुछ न होना या कुछ न समझना बाकी रहेगा या समाप्त हो जाएगा। इसलिए अपने प्रणानुसार कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा मैं कहता हूं कि मैंने क्या समझा? यूं तो कुछ नहीं समझा मगर यदि कुछ समझा तो यह समझा कि उसका अन्त नहीं मिलता। जीवन चेतन का एक बुलबुला है, प्रकृति के नियम अनुसार बुलबुला बनता है, कहीं फकीर का बुलबुला बन गया, कहीं आप लोगों का बुलबुला है, कहीं सूर्य, चांद, नक्षत्रों के बुलबुले हैं और कहीं लोक लोकान्तर के बुलबुले बनते हैं और टूट जाते हैं। यह खोज मेरी तो समाप्त हुई नहीं और किसी की समाप्त हो गई होगी तो मुझे पता नहीं और यदि समाप्त समझते हो तो केवल यह है कि मैं कौन हूं? बस चेतन का एक

बुलबुला हूं। किसी शक्ति ने अपनी मौज से बनाया है और उसी की मौज से खेल कर रहा हूं और उसकी मौज से चला जाऊंगा उसका अन्त तो मुझे मिला नहीं।

सबको राधास्वामी

सत्संग हज़ूर परम संत परम दयाल
बाबा फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मंदिर, होशियारपुर

दिनांक २६ जनवरी १९७५

नाभ भेद है सबका सार । नाम दुख से दे छुटकार ॥
नाम बसे त्रिलोकी पार । तू ढून्डे जिभ्या रस द्वार ॥
नाम ओम है नाम है सोहंग । नामहि सारंग नामहि रारंग ॥
नाम सत्त है सत्त की धुन । नाम की धुन ऊंचे चढ़ सुन ॥
पंच नाम का लेकर भेद । जप निज नाम मिटे जग खेद ॥
बिन गुरु नाम हाथ नहीं आवे । गुरु मिले तब नाम बतावे ॥
नाम श्रवन कर नाम मनन । नामधार तब निध्यासन ॥
साक्षात जब नाम करेगा । तव नही जग के शोक मरेगा ॥
राधास्वामी सन्त स्वरूप । नाम दान मेटा भव कूप ॥

घट में नूर प्रकाशिया, बरस गया चहुं ओर।
जगमग जगमग हो रहा, बढ़ा नूर का जोर॥
नूर नूर सब कोई कहे, नूर न जाने कोय।
गुरु गम परख का ज्ञान जो, नूर कहावे सोय॥
आदि अन्त यह नूर है, छाय रहा भरपूर।
जो न लखे इस नूर को, तिस शंखन में धूर॥
घट में प्रेम प्रकट भया, आँसू निकले नैन।
धोगए छिन में नैन दोउ, अब लख नूर का सैन॥
राधास्वामी रूप में, दरस नूर का पाय।
तिमिर मिटा अज्ञान का, सतगुरु भय सहाय॥

राधास्वामी ! यह शब्द मैंने भी सुने और आप ने भी। पहले शब्द में वह कहते हैं कि पांच नाम का भेद लो और फिर नाम को पकड़ो।

पंच नाम का लेकर मेद,
जप निज नाम मिटे जग खेद।

पहले पांच नाम का भेद लो और फिर निज नाम को जपो तब जग का खेद समाप्त होगा। यह नाम कौन बताएगा ?

बिन गुरु नाम हाथ नहीं आवे।
गुरु मिले तब नाम बतावे॥

औरों का तो मुझे पता नहीं। मैंने क्या समझा ? सुमिरन ध्यान करके २ और शब्द को

सुनते हुए आयु के ८८ वर्ष बीत गए। बीन सुनता रहा रारंग सारंग सुने। अपने आप से पूछता हूं कि क्या बीन सुनने से और रारंग सारंग सुनने से तेरा जग का खेद चला गया ? नहीं। तो फिर यह सिद्ध हुआ कि रारंग सारंग या बीन सुनने वाला आदमी भी जग के खेद को मिटा नहीं सकता। मेरा भी यही अनुभव है और हजूर दाता दयाल जी महाराज भी यही कहते हैं कि गुरु नाम का भेद देता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया और आप लोगों के अनुभवो के कारण मुझे सच्चे नाम का भेद मिला। सच्चा भेद क्या है ? व्यक्ति संसार में आता है, किसी वस्तु की खोज करता है, किसी को मालिक की खोज है, किसी को ब्रह्म की तलाश है, कोई शब्द में जाना चाहता है, और किसी को प्रकाश की इच्छा है। मैंने अपने अन्तर में बहुत प्रकाश देखे। मुझे शब्द नहीं मिलते कि कैसे उनको वर्णन करू मगर यह नूर देखने के बाद भी मुझे शान्ति नहीं मिली। मैंन आनन्द लिए और प्रशन्नता ली मगर समय आने पर मैं गिर गया। क्योंकि मेरे जीवन के अनुभवों को यह शब्द ठीक सिद्ध करते हैं

दसलिए मैं अपने आपको गलत नहीं समझता। नाम-धारी लाखों की संख्या में हैं कोई किसी नाम का जाप करते हैं, कोई आदमी कोई धुन सुनता है, अपने अपने विश्वास के अनुसार लगभग सब ही कुछ न कुछ करते हैं लेकिन जग के खेद से कोई नहीं बचता, फर्ज करो कि मेरा अनुभव गलत है लेकिन मैंने संतों के हालत देखे, उनको भी कष्ट आए उन्होंने अपने मन के अन्तर की दशा नहीं बताई मगर आँख वालों ने उनकी दशा को देख कर अनुमान लगाया और अनुभव किया। मेरी टांग में कष्ट था मुझे काफी पी ा थी और मैं उस पीड़ा को अनुभव करता हूं। लोग कहते हैं कि सन्तों को कष्ट नहीं होते। यह बात गलत है। लोग यूं ही सन्तों की गुडूडो चढ़ाते हैं। असलियत क्या है ? मेंने ओम, सारंग, रारंग और बीन सुनी और सारा जीवन सच्चाई से गुजारा मगर मैं जग के खेद से न बच सका। मुझे चिन्ता भी हुई, में कामी भी हुआ और मुझे क्रोध भी आया तो इससे सिद्ध हुआ कि लाख तुम नाम जपो, प्रकाश देखो और शब्द सुनो तुम्हारा जग का खेद नहीं जाएगा। हां उस समय के लिए तुमको

प्रसन्नता और आनन्द मिलेगा, रिद्धि सिद्धि भी आ जाएगी और संसार में तुम भक्त भी प्रसिद्ध हो जाओगे और तुम्हारा नाम भी रोशन हो जाएगा मगर तुम्हारा खेद नहीं जाएगा। कई आदमी या स्त्रिएं कई बार बेहोश हो जाते हैं,होती तो है उनको कोई बीमारी, मानसिक पीड़ा, लेकिन लोग कहने लग जाते हैं कि इसकी सुरत चढ़ गई है और सतलोक पहुंच गया है, यह अज्ञान है।

घट में नूर प्रकाशिया, बरस गया चहूं ओर।
जगमग जगमग हो रहा, बड़ा नुर का जोर।

जो नूर हमारे अन्तर में प्रकट होता है वह हमारे आत्मा का नूर है, सारा संसार इस नूर या प्रकाश से बना हुआ है। मैं हूं रिसरचर Researcher मगर मुझे किसी बात का दावा नहीं मैं हर बात को सच्चाई से देखना चाहता हूं। नूर आता कहां से है? यह आपको कोई बताता नहीं। देखो! तुम जन्म की ओर विचारो। बाप के वीर्य में तुम एक छोटे से कीड़े थे। यह कीड़ा कैसे बना? बाप ने जो अन्न खाया उससे रक्त बना, रक्त से ओजस, ओजस से मज्जा और मज्जा से वीर्य बना। लेकिन एक

आठ साल के बच्चे के अन्तर वह कीड़ा नहीं होगा क्योंकि कीड़ा तो तब पैदा होगा जब वीर्य बनेगा। जो अन्न माता पिता ने खाया या उसने स्वयं खाया वह ग्रहों की और चान्द की किरणों से पैदा हुआ। जिस प्रकार का अन्न खाया और जिस प्रकार के ग्रहों से शरीर बना उसी प्रकार का अन्तर में नूर पैदा होगा। आजकल विज्ञान का युग है। उटपटांग बातों को आजकल संसार नहीं मानता। लोग अपने अंतर में नूर देखते हैं, सूर्य चांद सितारे देखते हैं और फिर मुझे लिखते हैं कि बाबा जो हमारा यह काम हो जाए। तो सिद्ध हुआ कि इस नूर के देखने से भी शान्ति नहीं मिलती और जग का खेद समाप्त नहीं होता।

नूर नूर सब कोई कहे, नूर न जाने कोय।
गुरु गम परख का ज्ञान जो, नूर कहावे सोय॥

सब संसार हीं नूर २ करता है। सारे धर्म नूर को मानते हैं और नूर का साधन करते हैं लेकिन जब तक गुरु गम ज्ञान की समझ नहीं आती तब तक शान्ति वहीं मिलेगी और मेर तेर नहीं नहीं जाएगा। क्योंकि मेरे जिम्मे निवल, अबल और

अज्ञानियों को सहायता करना, जगत कल्याण का काम करना और जीवों को भवसागर से पार करने का कर्तव्य है। इसलिए मैंने गुरु गम ज्ञान जो जीवन मैं समझा वह कहा लेकिन मुझे किसी बात का दावा नहीं है। हो सकता है कि सन्तों का गुरु गम ज्ञान कोई और हो।

यदि शब्द सुनने वालों और प्रकाश को देखने वालों को शारीरिक कष्ट न आते, उनके अपमान न होते और उनको आर्थिक कठिनाईयां न आतीं तब तो मान लेता कि यह जो विधि साधन, अभ्यास नूर और शब्द की है यह ठीक है मगर इतिहास बताता है कि इन सन्तों में से बहुत से सन्तों ने अपनी अंतिम आयु में बहुत से कष्ट उठाए। तो फिर गुरु गम ज्ञान की परख क्या है ? एक तो यह है कि जो नाम अन्तर में तुम सुनते हो उससे तुमको प्रसन्नता मिलेगी और यदि तुमको ऊपर का नाम भी प्राप्त हो जाए तो फिर भी शारीरिक कष्टों से छुटकारा नहीं मिल सकता। इस नूर के साधन का ज्ञान तुमको सांसारिक अथवा शारीरिक कष्टों से नहीं बचा सकता। कर्मानुसार कष्ट अवश्य आएगा. जिसने मरना है वह

वह मरेगा । यदि किसी ने तुमसे शत्रुता करनी है तो वह करेगा । इसलिए मैंने गुरु गम ज्ञान यह समझा है कि कर्मानुसार दुख और सुख अवश्य आएगा इसलिए इस जीवन में रहते हुए अपने कर्म को अनुकूल बनाओ, अपनी नोयत साफ रखो और किसी से छल कपट मत करो, क्योंकि यदि मरने के बाद तुम मुक्त नहीं हुए ओर दूसरा चोला लेना पड़ा तो अपने कर्म का फल भोगना पड़ेगा इसलिए अपना कर्म ठीक रखो । इस भरोसे पर मत रहो कि तुम नाम जपते हो और पार हो जाओगे । मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? मैं अपनी दशा को जानता हूं । मैं प्रकाश को देखता हूं ऊंचे से ऊंचे शब्द सुनता हुं मगर मैं अपने कष्ट को दूर न कर सका । मैं तो क्या कोई भी नहीं कर सका । लेकिन गुरु गम ज्ञान की जो परख है वह इन दुखों से बचातो है । वह परख क्या है ? जब से मैंने तुम लोगों से सुनो कि मेरा रूप तुम लोगो के अन्तर प्रकट होता है और तुम्हारे काम कर जाता है लेकिन मैं तो होता नहीं तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रंग रूप प्रकट होते हैं यह असल में है नहीं मगर

भासते हैं। इस विचार का पक्का हो जाना ही गुरु गम ज्ञान की परख है। मेरा यह ज्ञान अभी शत प्रतिशत परिपक्व नहीं हुआ इसलिए मैं किसी समय गिर जाता हूं। बाह्य प्रभाव के कारण जो हमको दुख सुख आता है वह इस ज्ञान से समाप्त हो जाता है और प्रालब्ध कर्मानुसार जो दुख सुख मानव को आते हैं इस ज्ञान से आदमी उनको भोगता हुआ अनुभव नहीं करता। कहने को तो मैं भी कह देता हूं कि यह सब माया है मगर मुसीबत के समय पता चलता है। तोता पिंजरे में राम राम करता है मगर जब बिल्ली सामने आती है तो राम राम की जगह टें टें रह जाती है।

कोई गुरु यह नहीं बताता कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता बल्कि यह सब तुम्हारे ही मन का खेल है या तुम्हारा अपना ही विश्वास है। यदि बताएं तो धन नहीं आता और डेरा नहीं चलता। तो गुरु गम ज्ञान की परख यह है कि ऐ मानव! जब तक इस संसार में हो अपनी नीयत को साफ रखो। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से हेराफेरी मत करो क्योंकि ऐसा करने से कर्म बन जाता है और

कर्म के फल से कोई बच नहीं सकता, कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है। इस समय देश में क्या हो रहा है ? धार्मिक संसार में द्वेष है, राजनैतिक संसार में ईर्ष्या द्वेष है, हड़ताले हो रही हैं धेराव हो रहे हैं और धरने दिए जा रहे हैं। इस कर्म के फल से कौन बचेगा ? कोई नहीं बच सकता ?

दूसरा गुरु गम ज्ञान यह है कि जब यह समझ आ जाए कि यह सब माया है तो अपने आप को वहां ठहराने का यत्न करो जहाँ यह रूप रंग नहीं है वहां केवल तुम्हारा अपना ही आप या तुम्हारी सुरत है। अपने आप को अपने ही आप में ठहराओ मैं प्रयत्न तो करता रहता हूं मगर फिर भी कभी गिर जाता हूं। मैंने गुरु का कर्तव्य तो किया है मगर मैं गुरु बना नहीं क्योंकि मैं समझता हूं कि गुरु बन के काम करना, मथ्थे टिकवाना, लोगों से धन, मान, प्रतिष्ठा लेना महापाप है मगर यदि शिष्य नहीं देता तो उसका कल्याण नहीं होता। क्यों ? स्वामी जी महाराज ने अपनी वाणी में लिखा है।

गुरु तो पेसा चाहिए, शिष्य का कुछ न ले।
शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ दे ॥

यह ज्ञान कब प्रकट होगा ? जब तुम मन के चक्र से निकल कर अपने आप में ठहरोगे लेकिन तुम बहां कब ठहर सकोगे ? सुनो।

आदि अन्त यह नूर है, छाय रहा भरपूर।
जो न लखे इस नूर को, तिस आंखन में घूर।

आद अन्त का नूर कौन है ? तुम्हारो अपना ही जात। हम सब उस मालिक को अंश हैं और वहीं परमतत्व सब जगह फैला हुआ है। मगर वहां पहुंचोगे कब ?

घट में प्रेम प्रकट भया, आँसू निकले नैन।
धो गए छिन में नैन दोउ, अब लख नूर का सैन ॥

प्रेम सदा बलिदान करता है। प्रेम मांगता नहीं बल्कि देता है। यह प्रेम को पहचान है। प्रेम में मांगना नहीं है लेकिन हम लोग गुरु से प्रतिदिन मांगते हैं और अपने निज स्वार्थ के लिए मांगते है। लोग कहते हैं कि बाबा फकीर ने हमारा यह काम कर दिया और वह कर दिया, बाबा कौन है करने वाला। तुम्हारा प्रेम और कुरवानी सब कुछ करती

है । जब प्रेम बढ़ते २ ऊंचा चला जाता है तो फिर मन साफ हो जाता है प्रेम के बिना मन साफ नहीं होता । अब सांसारिक बात को ही ले लो । मजनू लैला का प्रेमी था । बहुत कुरबानी की । घरबार खो बैठा. उसके अन्तर मैं लैला ही लैला दिखाई देती थी । कहते हैं कि एक जगह लैला के विचार में इतना लीन हुआ कि काफी समय वहां बैठा रहा, वस्त्रों में दीमक लग गई मगर उसको कोई पता नहीं । वह तो लैला का प्रेमी था । ऋषि बाल्मीक के बारे में लोग कहते हैं कि वह मुसाफिरों को रोक लिया करते थे । एक बार नारद ऋषि वहां से गुजरे बालमीक जी ने रोका तो नारद जी ने कहा कि आप यह काम क्यों करते हो ? उन्होंने उत्तर दिया कि अपने बाल बच्चों का पेट पालने के लिए । नारद जी ने कहा कि मैं यहाँ ठहरता हूं तुम जाकर अपने बाल बच्चों से पूछ कर आओ कि क्या वह भी तेरे इस कर्म में भागीं बनेंगे । जब बालमीकि जी ने घर वालों से पूछा तो उन्होंने इन्कार कर दिया । फिर नारद जी ने उनको ज्ञान दिया । वह अपनी भक्ति में इतने लीन हुए कि समाधि लग गई और

कई वर्ष वहां बैठे रहे। कहते हैं कि उनके चारों ओर दीमक ने घर बना लिए थे। अन्त में वही बालमीक ब्रह्म ऋषि कहलाए।

देखो ! तुम लोग गृहस्थी हो। चार दिन के जीवन के लिए या अपनी मान, प्रतिष्ठा, धन और परिवार के लिए किसी प्रकार की हेराफेरी मत करो। यह वस्तुएं साथ नहीं जाएंगी। यदि तुमने अपने जीवन को नहीं बदलना तो मेरे पास आने का कोई लाभ नहीं है। जब तक किसी आदमी का मन निर्मल नहीं होता उसका कुछ नहीं बनेगा। तुम लोग सरकार के टैक्स की चोरी करते हो। दामाद ससुर को तंग करते हैं, हेराफेरी करते हो। भाई की सम्पति हड़प करते हो। सास बहु को तग करती है यह सब बुरे कर्म तुमको खा जाएंगे। संसार की दशा तुम अपनी आंखों से देख रहे हो कोई अन्धा कोई लूला कोई लगड़ा पैदा होता है। यह सब बुरे कर्म का फल है। यह रघुवीर दूध में पानी मिलाता था लेकिन दशा खराब थी। मैंने कहा कि यह काम छोड़ दे। इसने मान लिया। क्या

अब यह भूखा मरता है? अब बहुत सुखी है। मिलावट करने वाले का दिल हर समय डरता रहता है। मैं जहां तुम लोगों को आध्यात्मिकता के बारे बताता हुं वहां संसार में सुखी रहने का उपाय भी बताता हूं। जो कर्म में हैं वह हर दशा में मिलेगा क्यो हेराफेरी करके जान बूझ कर अपने कर्म को बड़ाते हो। रूप लाल की दशा देखो। क्यों कष्ट में हैं। आखिर इसका कोई बुरा कर्म ही होगा जिसका दण्ड भुगत रहा है। यदि कर्म को नहीं मानते तो फिर यह मानना पड़ेगा कि संसार को बनाने वाला जालम है।

गुरु गम ज्ञान की जो परख अर्थात् समझ है उसको जो मैंने समझा वह अपने कर्म भोगवस कहता हूं मगर दावा कोई नहीं। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिए मैं अपना कर्तव्य समझकर पूरा कर रहा हूं जिसकी इच्छा चाहे माने और चाहे न माने। धन सम्पति ने तुम्हारे साथ नहीं जाना एक दिन कूच नगाड़ा अवश्य बजेगा। कर्म के फल से कोई नहीं बच

सकता इसलिए अपने कर्म को हर समय ध्यान में रखो। सांसारिक कारोबार ईमानदारी से करो और हेराफेरी से बचो। मैं अब बाहर दौरे पर जा रहा हूं। क्या लोगों को तारने जा रहा हूं ? इसलिए जा रहा हूं कि मन्दिर के लिए चार पैसे आ जाएंगे। संसार तो तरेगा अपने आचरण से। मैंने तो मार्ग बताना हैं सच्चाई वर्णन करता हूं, हेराफेरी नहीं करता और न ही हेराफेरी करके किसी से कुछ लेना चाहता हूं। मैं तुम लोगों से इसलिए प्यार नहीं करता कि तुम लोग मन्दिर में धन देते हो। मैं तुम लोगों को वह वस्तु बताना चाहता हूं जो मैंने जीवन मैं प्राप्त की है। मैंने सच्चाई से जीवन गुजारा है। क्या मैं भूखा मरता हूं ? नौकरी के समय मैंने अपने कर्मचारियों को बचाने के लिए बहुत कुछ किया मगर अपने लिए कभी हेराफेरी नहीं की। मैंने हेराफेरी को पाप समझा। किसी का उपकार करने से शान्ति मिलती है। भूखे को रोटी दो चाहे मांग कर दो। अपने आप या अपनी सुरत को अपने आप में ठहराने का यत्न करो फिर गुरुस्वरूप का ध्यान या प्रकाश का साधन करो या न

करो लेकिन जब तक मन निर्मल नहीं होता तुम अपने आप में ठहर नहीं सकते। इसलिए किसी पूर्ण गुरु की संगत करो। यदि गुरु पूर्ण नहीं है और उसका मन निर्मल नहीं है तो उसकी संगत और Readition से तुम्हारा मन निर्मल नहीं हो सकता। मन को निर्मल करने के लिए बलिदान और त्याग की आवश्यकता है। पहला बलिदान यह है कि घरवालों और सम्बन्धियों से मोह न रहे अपना कर्तव्य समझ कर उनकी सेवा करो मगर उनमें फंसो नहीं। दूसरी बात यह है कि तुम्हारे अंतर में जो रंगरूप आते हैं और तुमको दुख और सुख देते हैं, उनको छोड़ो। उनके साथ ही वही व्यवहार करो जो हम अपने घरवालों से करते हैं अर्थात् उन दृश्यों का आनन्द लो मगर उनमें फंसो नहीं तब तुम अपने आप में ठहरने के योग्य बन सकोगे। यह है भेद। कबीर साहब ने लिखा है :—

गुरु को मानुष जानते, सो नर कहिए अन्ध।
दुखी होय सँसार में, आगे जम का फन्द॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीना नाहीं।
कहै कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहीं॥

अब जो बाबे फकीर को गुरु मानते हैं, बाबा फकीर तो देहधारी है इसलिए वह कैसे आगे जाएंगे ? तुम स्वयं विदेह हो इसलिए अपने आप को अपने आप में ठहराओ। शरीर, मन और मन के विचार, प्रकाश और शब्द तुम्हारी देह हैं, जब तक इनमें फंसे रहोगे तब तक तुम देहधारी हो। जो इनमें नहीं फंसता वही विदेह है। जो सारा जीवन इनमें ही फंसा रहेगा वह विदेहगति को प्राप्त नहीं कर सकता। हजूर दाता दनाल जी महाराज ने मुझे कहा था कि—

आप आप को आप पिछानो।
कहा और का नेक न मानो।

इसलिए यह अनुभब का विषय है। देखा देखी का या कहने सुनने का विषय नहीं है। कबीर साहिब ने लिखा है—

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।
सुरत समानी शब्द में, ताको काल न खाय॥

प्रकाश और शब्द हमारे Self की देह हैं तभी तो राधास्वामी मत गुरु के चरण प्रकाश मानता

है और शब्द को नाम या गुरु मानता है। मैं वह बात कहता हूं जो मेंने स्वयं अनुभव किया है। सन्तों ने भेद को छुपा के रखा। सिबाए किसी विशेष शिष्य के किसी को बताया नहीं। कबीर साहब ने धर्मदास को बताया मगर उसका मुंह बंद कर दिया।

धर्मदास तोहै लाख दुहाई।
सारभेद नहीं बाहर जाई॥

मेरे जिम्मे क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कर्तव्य सौंपा था कि निबल, अबल और अज्ञानियों की सहायता करना आदि २। इसलिए मेंने इस भेद को खोल दिया। नूर क्या है? अनुभव हैं। जिस नूर ने तुमको शान्ति देनी है वह ज्योति नहीं है और न ही वह सूर्य, चांद सितारे हैं जो तुम्हारे अन्तर में दिखाई देने हैं। तुमको शान्ति देने वाला नूर यह अनुभव है कि मैं कौन हूं। आप लोगों की दया से मुझे पता लग गया कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं Evolution के सिलसिले में बना और जब यह टूटेगा तो उसी रूप में मिल जाएगा जहां से कि वह अलग हो कर आया था। इसलिए मैं अब

प्रकाश और शब्द की भी चिन्ता नहीं करता जब प्रकाश और शब्द से आगे चला जाता हू तो वहां एक अटूट शब्द होता रहता है और मेरी चेतन की अवस्था बनीं रहती है औरु मुझे कोई कष्ट नहीं होता ।

आद अन्त यह नूर है छाय रहा भरपूर।
जो न लखे इस नूर को, तिस आँखन में धूर॥

जो असली वस्तु को नहीं समझता वह अज्ञानी है और वेसमझ है ।

घट में प्रेम प्रकट भया, आंसू निकले नैन ।
धो गए छिन में नैन दोऊ, अब लख नूर का सैन ।

मैंने प्रेम किया हुआ है । मैं प्रेम से रोया करता था क्योंकि मुझे सच्चाई की खोज थी इस प्रेम के जज्वे से मेरा मन निर्मल हो गया । में अब भी प्रेम करता हूं यद्यपि हजूर दाता दयाल जी महाराज तो अब चोला छोड़ गए मगर मैं आप लोगों को गुरु मानकर आप से प्रेम करता हूं । प्रेम ही जीवन है । मझे कभी यह विचार नहीं आया कि मैं गुरु हूं ।

हजुर दाता दयाल जी महाराज ने अपने शब्दों में काफी हकीकत, असलियत और सच्चाई वर्णन की है और उनके शब्दों का यहां पाठ होता है उन्होंने मुझे कहा था कि फकीर तुमको काम देता हूं इसके करने से तुमको सच्चे सतगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और तुम्हारा कल्याण होगा। अब तुम लोगों ने मेरा कल्याण कर दिया और मैं सन्तमत को समझने के योग्य हो गया।

राधास्वामी रूप में, दरस नूर का पाए।
तिमिर मिटा अज्ञान का, सतगुरु भए सहाए।।

बाहर के गुरु के सत्संग से तुमको असली नूर का पता मिलेगा। यदि गुरु पूर्ण है तो वह तुमको अपने जाल में नहीं फंसाएगा यह लेना देना या मन्दिर में आना जाना यह तो संसार का व्यवहार है इसके बिना संसार में निवाह नहीं है मगर यदि तुम सारा जीवन मानवता मन्दिर या बावे फकीर को ही पूजते रहोगे तो पार नहीं जा सकोगे। मेरा अज्ञान इस अनुभव से गया कि वह मालिक एक शक्ति है परमतत्व है और Supreme power है और मैं उसकी

एक अंश हूं। उसी से ही बना हूं और उसी में समा जाऊंगा। मैं न शरीर हूं, न मन हूं, न ब्रह्म हूं, न जीव हूं, न सत हूं और न अलख हूं, मैं किस बात का अहंकार करूं ? जैसी उसकी इच्छा होगी वैसा ही होगा। जैसे नूर है वैसा ही नाम है। मैं अपनी नीयत को साफ रखता हूं।

नाम भेद है सबका सार।
नाम दुख से दे छुटकार।

क्या ओम, रारंग सारंग, पांच नाम या राधा-स्वामी नाम जपने से छुटकारा हो जाएगा ? संसार ने नाम को समझा नहीं। अपने रूप का ज्ञान प्राप्त करना ही नाम है और अनुभव का नाम "नाम" है। स्वामी जी महाराज ने कहा है

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा.
तू तो पढ़ा भरम के कूपा।

नाम गुरु के अधीन है शर्त यह कि गुरु कोई पूर्ण गुरु हो आजकल तो गुरु बनना व्यवसाय है। गुरु तो खास दरजा रखता है।

नाम बसे तरलोकी पार,
तू ढूण्ढे जिभा रस द्वार ॥

स्थूल, सूक्ष्म और कारण प्रकृति से परे नाम है। शरीर में बैठकर जो चाहे करते रहो, यह वो पहल पौड़ी है। जैसे एक बच्चा जब पहली या दूसरी श्रेणी में पढ़ता है तो उसको पढ़ाई बहुत कठिन होती है लेकिन जब वह मैट्रिक में पहुंच जाता है तो उसके लिए पहली दूसरी कक्षा कोई अर्थ नहीं रखती, ऐसे ही जब आदमी अभ्यास करता हुआ ऊपर की मंजिलों में पहुंच जाता है और उसको अनुभव हो जाता है तो फिर पहले दर्जे या निचली कक्षाओं की उसको आवश्यकता नहीं रहती।

नाम ओंम है नाम है सोहंग,
नाम हो रारंग नाम ही सारंग।
नाम सत है सत की धुन,
नाम की धुन ऊचे चढ़ सुन।
पाच नाम का लेकर भेद,
जप निज नाम मिटे जग खेद।

पाच नाम का भेद लेकर निज नाम को जपो।

पांच नाम को रट जबान से नहीं है। अपने अन्तर में घंटा संख सुनना, ओम की धुन सुनना, रारंग सारंग और सोहं ग का शब्द सुनना ही पांच नाम का जाप है। जब इनका भेद मिल जाएगा तब आगे जा सकोगे।

बिन गुरु नाम हाथ नहिं आवे।
गुर मिले तब नाम बतावे।

शब्द का अर्थ शायद कोई बता भी दे मगर असली भेद कोई पूर्ण गुरु ही बताएगा। जो स्वयं पांच नाम में फंसे हुए हैं वह तुमको निज नाम का भेद कैसे देंगे ? मैं यह भेद बता रहा हूं, इसलिए तो मैं अपने आप को समय का सन्त सतगुरु कहता हूं। जो भेद पिछले सन्तों ने छुपा के रखा मैं वह नाम का भेद दे रहा हूं।

नाम श्रवन कर नाम मनन.
नाम बार तब निध्यासन।
साक्षात जब नाम करेगा,
तब नहीं जग के शोक मरेगा॥

मैंने तुम लोगों की दया से नाम को साक्षातकार किया। आप लोग मेरे सच्चे सतगुरु हो इसलिए मैं

मैं आप सत्संगियों की सेवा करता रहता हूं मगर कई आदमी मेरे इस विचार का अनुचित लाभ उठाते हैं जिस प्रकार आजकल के गुरु चेलों के अज्ञान का अनुचित लाभ उठाते हैं। चेलों को बजाए सच्चाई वर्णन करने के यह विश्वास करा देते हैं कि हम तुम्हारे अन्तर गए थे। ऐसे ही कई लोग मुझे तंग करते हैं।

राधास्वामी सत स्वरूप,
नामदान मेटा भवकूप।

राधास्वामी ने नाम दिया। मगर साधन करने के बाद फिर जब कोई पूर्ण गुरु तुमको मिलेगा वह तुमको नाम का असली भेद देगा। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने "अद्भुत उपासना योग" नामी पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर लिखा है कि जब अन्तर में बीन बजने लगे तब किसी सतगरु की खोज करो। मैं सच कह रहा हूं और यह मेरा अनुभव है कि यदि कोई पूर्ण गुरु मिल जाए तो फिर तुमको निचली सोपानों के साधन की भी कोई आवश्यकता नहीं है मगर यह केवल उनके लिए है जिनको आगे जाने की आवश्यकता है और जिनको सांसारिक

इच्छाएं हैं उनकी निचली सोपानों में साधन करना पड़ेगा अन्यथा उनकी सुरत ऊपर नहीं जाएगी।

अपने आप में ठहरने का यत्न करो किसी गुरु ने तुमको फूंक मार कर पार नहीं करना है यह सच्चाई हे। अपने मन को साफ करो और अपनी नीयत को साफ रखो। सबसे अच्छा उपाय यह है कि अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी से हेराफेरी मत करो यदि बच्चे भूखे हैं और उनके लिए खाने के लिए कुछ नहीं है तो पोलिसी से काम ले कर भी उनके लिए भोजन का प्रबन्ध करना और उनकी जान बचाना पाप नहीं है। अब मैं बाहर जा रहा हूं मैंने अपने दौरे के विषय में लिखा है कि मैं मंदिर के लिए भी आ रहा हूं तो मेरी यह वर्णन शैली भी एक पौलिसी है कि लोग मन्दिर के लिए कुछ दें।

ऐ मेरे बनाने वाले! संसार के आधार!! होश आई। संसार देखा, विचार आया कि इस संसार को बनाने वाली कोई शक्ति है। उस शक्ति को मैं मालिक समझता था। उस मालिक की तलाश के सिलसिले में आपकी मौज हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले

गयी और उस रूप में आपको माना । प्रेम किया । आपने उस रूप द्वारा सन्तमत दिया । मेरा जीवन सन्तमत में गुजर गया । क्योंकि आपने संस्कार दिया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिए जो कुछ मैंने अनुभव किया वह कहा । मेरा अनुभव ठीक है या गलत है मगर मैं आज्ञा का पालन कर चला । बस अब यह प्रार्थना है कि मेरे अलग अस्तित्व को समाप्त कर दे और स्थाई रूप में मुझे वह अवस्था प्राप्त हो जो मेरी पहली अवस्था है अर्थात् जहां से मैं पहले आया आया था । यही सच्चे हृदय से मेरी प्रार्थना है ।

सबको राधास्वामी

———।

सत्संग हजूर परम संत परम दयाल
बाबा फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मंदिर, होशियारपुर

दिनांक २५ जननरी १९७५

राधास्वामी सत है और सकल सब झूंट।
जो सिमरे इस नाम को, छूटे काल का खूंट॥

राधास्वामी ! मेरो किसमत राम को तलाश के सिलसिले में मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई उन्होंने मुझे राधास्वामी नाम दिया। इनकी वाणियों में सबका खण्डन है। राधास्वामी नाम और राधास्वामी धाम का गुण गाते हैं। मैंने प्रण किया था कि मैं इस मार्ग पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। मैं दावा तो किसी बात का नहीं करता मगर सत्यप्रिय व्यक्ति के

नाते अपने आप से पूछता हूं कि क्यों फकीर ! यदि गलत तरीके से राधास्वामी मत की बड़ाई करेगा तो कुष्टी हो कर मरेगा । जो कुछ बाणी में लिखा है, क्या वह ठीक है ? हां ! कैसे ? जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, उनकी सूरतें चढ़ाता है और मरते समय ले जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर जो रंग रूप पैदा होते हैं यह सब माया है । असल में यह है नहीं तो मैं मन को छोड़ शर आगे जाने को विवश हो गया । पहले मैं भी नाम रूप में फंसा हुआ था । इसमें आनन्द लेता था ।

नाम रूप दोउ अकथ कहानी ।
वरनत बने न जाव बखानी ॥

नाम रूप क्या है ? जो कुछ हमारे अन्तर में प्रेम, भक्ति, योग, ज्ञान प्रकट होता है वह कोई न कोई अपना नाम या रूप रखता है । जब तक कोई नाम और रूप से परे नहीं जाएगा वह राधास्वामी नाम को प्राप्त नहीं कर सकेगा । मैं वही फकीर हूं जिसने बड़े २ तप किए । बारह

घण्टे अभ्यास किया। क्योंकि मैं नाम और रूप में आनन्द लेता था मगर राधास्वामी नाम नहीं मिला। जबसे यह समझ आई कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता तो फिर यह ज्ञान हो गया कि नाम रूप से परे भी कोई वस्तु है। यह नाम रूप क्या है? था नहीं, है नहीं मगर भासता है। जो कुछ भी अंतर में प्रकट हुआ. वह झूठ ही तो था। सब कुछ कैसे है? जितने भी रूप योगियों ज्ञानियों के अन्तर आते हैं या भक्तों के अन्तर प्रेम उठता है। वह क्या है?

जब लग कोई न समझे बात।
सुने कहे बाढ़ें उत्पात।
अन्धे बहरे को क्यों समझावे,
बिन विवेक कुछ हाथ न आवे॥

विवेक के बिना कुछ हाथ नहीं आता। मुझे विवेक यह मिला कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। जो कुछ अंतर में प्रकट होता है वह नाम और रूप है और वह झूठ है। नाम रूप में कौन कौन फंसा हुआ है?

गुरु पशु सार भेद नहिं पाते,
विद्या पशु बातों अटकाते।

गुरु पशु क्या करते हैं, गुरु की देह के पीछे लगे रहते हैं। विद्या पशु बाते करते रहते हैं लोगों को पकड़ कर समझाते हैं। यह वाणियों, वेदों या ग्रन्थों के हवाले देने वाले सब विद्या पशु हैं।

ज्ञान पशु समझे नहीं ज्ञान।
मान पशु तप अटका अभिमान॥

ज्ञान पशु तो आपको बता दिया। मान पशु वह है जो कहता है मैं ब्रह्म हूं, मैं पूर्ण हू, मैं सत हूं, अलख हूं क्योंकि वह किसी वस्तु को मान रहा है।

योग पशु सिद्धि में जकड़ा।
तप पशु तप धूनी का लकड़ा॥

योग पशु Will Power होती है और इससे सिद्धि आ जाती है। यह सब नाम रूप का झगड़ा है और तप करने वाला भी झगड़े में हैं क्योंकि नाम और रूप सब झूठ है। इसलिए इनमें से कोई भी इसका पा नहीं सकता है।

भक्ति पशु सूझे न विवेक।
वह नहीं लखे अनेक न एक॥

एक आदमी भक्ति करता है फकीरचन्द की, मगर मेरी बात को समझता नहीं। आज कोई किसी का दिन मनाता है। जो मनाते हैं यह भक्त पशु हैं क्योंकि यह जिसको पूजते हैं वह तो इनका अपना ही मन है, नाम और रूप है। इसलिए यह सब झूठ है।

राधास्वामी सत है. और सकल सब झूठ।
जो सुमिरे इस नाम को छूटे काल का खूँट।।

अंधे बहरे को कोई क्या समझावे। मगर यह मेरा कर्म है। मैं जानता हूं कि जो मैं कहता हूं इसको समझने वाला कोई नहीं। जब नाम और रूप छूट जाता है तो बाकी वह चीज रह जाती है जो हमारे अन्तर रहती हुई रूप को देखती है और इसकी साक्षी है जब वह वस्तु नाम और रूप को छोड़कर अपने आप में चली जावेगी तो वह इसकी अपनी चेतन शक्ति है इसका नाम है राधास्वामी या निज नाम। जब तक वह वस्तु नाम और रूप को देखती है अर्थात् सहस दल कमल नाम और रूप है, त्रिकुटि नाम और रूप है, सुन्न और महासुन्न

नाम और रूप है, भंवरगुफा और मनलोक यह भी नाम और रूप है। जब वह वस्तु इन से परे चली जावेगी और अपने आप में या अपनी चेतनता में चली जावेगी जिस का शब्द मैं सुनता हूं वह है राधा स्वामी नाम। शेष सब परीवर्तनशील है। वह है सत इस लिए मैं यह कहता हूं? कि जो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने या राधास्वामी मत ने कहा है वह ठीक है। संसार शब्दों के जाल में फंसा हुआ है। तुम निज स्वरूप कह लो या जो नाम तुम्हारी इच्छा है रख लो। तुम्हारे अन्तर वह वस्तु जो शरीर में, मन में और अभ्यास में रहती हुई सब को साक्षी है वह है असल वस्तु राधास्वामी नाम यदि कोई न लेना चाहे ता वह कोई नाम रख ले। इस वस्तु को नाम और रूप के झगड़ों से निकलना है।

मगर संसारियों के लिए कठिन है। मन खुशी चाहता है। सन्तों के अनुराग मार्ग पर चलने से संसार भी बन जाएगा और मनानन्द, ज्ञानानन्द विवेकानन्द भी मिल जाएगा और यदि तुमको कोई गुरु मिल जाएगा तो वह तुमको वहां सतपद भी

पहुंचा देगा। मुझे इच्छा थी वहां जाने की, इसलिए मैं अन्तर में ही आनन्द लेता. मस्ती लेता, बाहर भी आरप्तियां की और आनन्द लिया इसलिए सन्तों के मार्ग में राग मार्ग है, वैराग्य मार्ग नहीं ताकि तुम्हारा यह जीवन भी अच्छा व्यतीत हो जाए और यदि तुम्हारे भाग में हो तो आगे भी चले जाओ।

काल है समय। समय में गति होती है यह काल का चक्कर है इसकी खूंट कब छूटेगी ? जब आदमी नाम और रूप को त्याग कर असली वस्तु जो साक्षी है, जब वह अपने आप में ठहर जाएगी। यदि राधास्वामी नाम से घृणा है तो कोई और नाम रखलो यह तो तुम्हारा अपना ही नाम है।

यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले।
राधास्वामी गाय कर, जन्म सुफल करे॥
राधास्वामी निज रूप, गोता मार तन के कूप
हो जा सुख रासी॥
राधास्वामी नाम यह, मन मनसा को त्याग।
यही मुख्य अनुराग है, यही मुख्य वैराग॥

नाम कब मिलेगा ? जब मन मनसा छूटेगी।

मन में वासना और संकल्प है इनको छोड़ना पड़ेगा। यदि मन मैं साधन करने और दृश्य ने देखने की इच्छा है तो तुमने बाल बच्चे तो छोड़ दिए मगर तुम अन्तर में आनन्द लेना चाहते हो. तो तुमने मनसा कैसे छोड़ी। इसलिए अपने निज स्वरूप की आस रखो, बावे फकीर की आस नहीं। जो सारी आयु बाबा सावन सिंह जी महाराज, राम या कृष्ण ही को पूजते रहते हैं वह राधास्वामी नाम को नहीं पकड़ सकते, वह तो नाम रूप ही है इनको छोड़ना पड़ेगा। तब निज नाम आयेगा। यह अन्मित अवस्था है।

शब्द गुरु चेला सुरत होई।
शब्द सुरत मिलि भव दुख सोई।
शब्द सुरत गुरु चेला जान।
जो गुरु कहे सुरत सोई जान॥

शब्द गुरु सुरत चेला है। इसलिए यदि गुरु बाबे फकीर को या हजूर सावन सिंह जी महाराज को ही मुख्य मानते रहोगे तो वह असली मुकाम या राधास्वामी नाम को नहीं पा सकते। मैंने प्रण किया था कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा। यह

मेरा कर्म भ ग है । मैंने क्यों यह वासना की ? पता नहीं ।

राधास्वामी आदि जुगाद हैं. राधास्वामी धुरपद धाम ।
राधास्वामी चरन सरोज में, कोट कोट परनाम ॥

कौन वस्तु आद जुगाद है ? वह वस्तु आद जुगाद है जो अन्तर में सबकी साक्षी है वह जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ती मौजूद स्थल में है, प्रकाश शब्द में भी वर्तमान है । यह हालत तो बदलती रहेगी मगर वह वस्तु नहीं बदलेगी, वह आद अनाद है । यह सन्त कहते हैं । मैं यह नहीं कहता । क्यों ? यह तो शरीर में रहते हुए कहा है सन्तो ने । शरीर के त्याग के बाद यह रहेगी या नहीं इस का मुझे पता नहीं । मैं इसका निर्णय नहीं कर सकता । तभी तो मेरी इच्छा है कि मरने के बाद मैं बता सकूं कि मैं कहां गया । इस शरीर में रहते हुए यह आद अनाद है । क्या मरने के बाद भी वह आद अनाद है ? एक अनुभव है कि हस्ती से हस्ती होगी, नेसती हस्ती नहीं होगी । इसलिए हो सकता है कि वह वस्तु यदि रहेगी तो इसकी चेतनता नहीं रहनी चाहिए क्योंकि जब तक वह शरीर में है तब तक ही वह चेतनता को अनुभव करती है । इसलिए यह हो

सकता है कि चेतनता का एहसास न रहे। बून्द समुन्दर में मिलेगा। नमक की पोटली पानी में पानी हो गई। इसका नाम अकाल है यदि इस अवस्था को आद अनाम कहा जाता है तो फिर तो ठीक है।

राधास्वामी चरन में कोट कोट परनाम।

एक तो बाहर के दाता के चरण सरोज हैं। दाता। तेरे चरणों में गया था, मुझे खोज थी। आपने दया की। खेल खिलाहा। बहुत ऊंचा चला गया। अकेला होता हूं, तो सोचता हूं कि क्या तू किसी का कुछ कर सकता है ? इस समय घर में सब बीमार पड़े हैं। सोचता हूं कि यदि तू कुछ बन गया है तो उनको स्वस्थ कर दे, वहीं कर सकता कि जो किसी को मिला उसको अपने कर्म, अपने विश्वास का फल मिला मैंने तो केवल राय दी। तो फिर मैं किस परिणाम पर पहुंचा ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि फकीर ? शिक्षा को बदल जाना। मैं इस परिणाम पर तहुंचा। यह जो कुछ कबीर साहब ने, हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा, यह सब भ्रम था। इस खोज से

वह भ्रम कि मालिक या ईश्वर क्या है वह मिट गया। समझ आ गई कि मैं चेतन का बुलबुला हूं। उसकी मौज से बना और उसकी मौज से टूट जाएगा। इसलिए मैं न कुछ बना और न बनने की इच्छा है, इस अवस्था का नाम विदेह गति है। गुरु ने क्या दिया ?

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला।
धन्य उदार सुसहज किरपाला॥
तुम्हारी दया कटी जम फांसी.
तुम्हारी दया अविद्या नासी॥

जम फांसी क्या है ? मन के चक्र में था। अविद्या अर्थात् समझ नहीं आती थी। हजूर दाता दयाल जी की दया से और सतगुरु की दया से जो वस्तु मुझे मिला वह अपने कर्म भोगवस ससार को बता चला हूं, कोई दाबा नहीं। यदि दूसरे सन्तों को अधिकार है तो मुझे भी अधिकार है कि अपना अनुभव कह सकूं।

जड़ चेतन का बन्ध कटाना.
सकल उपाधी भरम हटाना।
अब नाहीं व्यापे काल न माया।
अब मैं रहूं न जग उरझाया।

अब उपाधि हट गई, समझ आ गई कि मैं कहीं नहीं जाता। योग भी उपाधी है और साधन भी उपाधि है। अपने ही मन के विचार थे और उनमें फंसा हुआ था।

जीवन मुक्ति दशा चित लाऊं।
जल में कमल समान रहाऊं।
कर्म अकर्म ज्ञान अज्ञाना.
द्वन्द अवस्था से बिलगाना।
चेतन घन आनन्द घन वासी,
घन आनन्द न पास सुपासी॥

द्वन्द क्या है? यह सारी रचना ही द्वन्द की है। मैं और मेरा गुरु, मैं और मेरा लड़का, मैं और मेरा बाप मैं और मेरी स्त्री या बच्चे आदि २। चेतन आनन्द घन वासी भी मैं हूं और नहीं भी। आनन्द घन वासी में नाम और रूप का सहारा था

जीवन में विदेह गति पाई.
जनक राज की बजे बधाई॥

मैं अपने आप को चेतन का बुलबुला समझता हूं और यह समझता हूं कि मैं तो हूं ही नहीं, मगर जब तक शरीर है आदमी यह समझता है कि यह सब कुछ मेरा ही है।

गुरु मिले शीतल भया, दूर भया उत्पात ।
राधास्वामी की दया काल करे नहीं घात ॥

उत्पात क्या है ? मेरा मन उत्पात ही तो है कि राम क्या है. सहस दल कमल क्या है, त्रिकुटी क्या है और सुन्न महासुन्न क्या है ? यह सब येरे मन का उत्पात ही तो था । अब वह सब समाप्त हो गया ।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हुं कि फकीर ! इतना ऊंचे से ऊंचा सत्संग तुम क्यों देते हो । जब तेरा अपना अन्तःकरण यह मानता है कि संसार को इस वस्तु की आवश्यकता नहीं । इसका उत्तर मेरे अन्तर में केवल एक है क्योंकि हजूर दाता दयाल जो महाराज ने मुझको जगत कल्याण का विचार दिया था जैसा कि इस शब्द से प्रकट होता है ।

तेरा रूप है अद्भुत अचरज. तेरी उतम देह
जग कल्याण जगत में आया. परम दयाल स्नेही ।

इसलिए इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए इस नीयत से यह भाषण दे रहा हूं कि धार्मिक संसार वाले जिनके कारण झगड़े फसाद होते हैं

और देश के बटवारे के समय अपनी तवाही हुई है। यदि इनकी खोपड़ी में यह असलियत बैठ जाए कि जीवन क्या है ? एक तत्व है, इसमें गति होती है, रचना हो जाती है और फिर समय आने पर इसमें ही समा जाती है तो शायद मानव जाति का धार्मिक द्वेष दूर हो जाए और इस संसार में रहने और जीने का सरल उपाय अर्थात् शिव संकल्प जो कि वेद मार्ग है इससे कुछ लाभ हो सके। केवल इस नीयत से और गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए और अपना कर्म भोग काटने के लिए मैंने यह काम किया है।

सबको राधास्वामी

———

सज्जनो !

इस बार वार्षिक सत्संग जो कि १४-१५ अप्रैल को बैसाखी के अवसर पर हुआ उस समय हजूर परम दयाल जी महाराज शारीरिक रूप से अस्वस्थ थे। भारत के लगभग सभी प्रान्तों से सत्संगी बड़ी श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के साथ महाराज जी के दर्शनार्थ और प्रवचन सुनने के लिए आए मगर खेद है कि उनको यह दोनों चीजें पूर्ण रूप से न मिल सकी गो उनको थोड़े समय के लिए दर्शन और परम दयाल जी महाराज का शुभ आर्शीवाद मिलता रहा। इस विचार से महाराज जी कष्ट उठाकर भी हर रोज थोड़ी देर के लिए स्टेज पर भी विराजमान होते रहे। ऐसा करने के लिए महाराज जी और मन्दिर के अधिकारी विवश थे। फकीर लाईब्रेरी चेरीटेबल की ओर से यथा शक्ति सेवा हुई। यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमा चाहते हैं।

हजूर परम दयाल जी महाराज क्योंकि बोल नहीं सकते थे इसलिये उन के मानवता पर लिखे हुए सात सत्संग जो कि जनता जनार्दन में छपे हैं

और आप सब पढ़ चुके हैं, हर सत्संग में दो दो कर के पढ़ कर सुना दिये गये, इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ जरूरी आदेश लिख कर दिये, वे भी सत्संगो में पढ़ कर सुना दिये गये जोकि हम मानव मन्दिर पढ़ने वालों कीं जानकारी के लिये प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्पादक
मानव मन्दिर

मौज की बात है कि मैं आज तेरह दिन से बीमार हूं। बोल नहीं सकता। मेरे जिम्मे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज, जिन पर मेरा विश्वास था और है कि वे मालिक-ए-कुल परम तत्व के अवतार थे और मेरे लिए आए थे, का आदेश है कि शोरीर छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना क्यों कि समय बदल जाएगा। मेरे कर्म और मालिक को इच्छा।

राष्ट्रपति श्री फ़खरुद्दीन अली अहमद और प्रधानमंत्री दन्द्रिा गांधी जी ने धार्मिक संस्थाओं से अपील की थी कि जनता को मानवता और अहिंसा की शिक्षा दो इसलिए इस वैशाखी पर मैंने यही विषय रखा है।

मेंने इसी विषय पर सात सत्संग दिए थे। वे श्री व्यास जी महाराज हर सत्संग में दों- दो कर के पढ़ दें गे। इन पर अमल करो। केवल माथा टेकने से काम नहीं बनता विश्वास श्रद्ध और अमल की आवश्यकता है।

दूसरे महात्मा अपने अनुभव और विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र हैं। यदि वे मुझ से सहमत न

हों तो मेरा खंडन कर सकते हैं। मुझे खुशी होगी मैं कोई दावा नहीं करता कि मेरी ही बात ठीक है मैंने जो कुछ ३५ वर्ष में कहा और लिखा वह मेरा अनुभव और मेरे व्यावहारिक जीवन के आधार पर है।

फकीर

१४-४-७५

नाम दान

लोग प्रायः मुझे नाम दान देने के लिए विवश करते हैं। जाहिरा तौर से सन् १९४२ ई० के बाद मैंने किसी को नाम दान नहीं दिया। नाम जपने वाले के यदि ख्यालात गंदे हैं और उन को रोकना नहीं चाहता या रुक नहीं सकते तो वह यदि नाम जपेगा तो उसके आन्तरिक जज़्बात और बढ़ जाएंगे। इसलिए केवल वे लोग जो अपना जीवन बनाना चाहते हैं यदि वे नाम का साधन करेंगे तो उनको लाभ पहुँच सकता है। यह मेरे जीवन का अनुभव

है और यही हजूर महाराज राय मलगराम साहब ने अपनी प्रेम-बाणी में लिखा है। बे आदमी जिन को जीवन का आचार व्यवहार ठीक रखने की आवश्यकता न हो उन्हें नाम दान नहीं मिलना चाहिये।

सच्चे जिज्ञासुओं के लिए यहां महात्मा दयाल दास हैं। वे अभ्यासी हैं। अनुभव ने सिद्ध किया है कि कुछ सज्जन जिन्होंने उन से युक्ति सीखी उनको लाभ हुआ। इस लिए भीड़ में नहीं, एकांत में दो चार दिन मन्दिर में ठहर कर वे उन से साधन की विधि सीख सकते हैं।

महात्मा दयाल दास मुझ को गुरु मानते हैं और में उन सब को जिन के अन्तर मेरा रूप प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, क्योंकि मैं नहीं होता इस लिए मैं इन सब को अपने सतगुरु का रूप मानता हूं।

यह मेरा काम नहीं। दाता दयाल जी महाराज का दिया हुआ संस्कार है जिसने मुझ से यह सारा काम करवाया।

न कुछ किया न कर सका।
न करने योग्य शरीर।

जो कुछ किया सो हरि किया
भयो कबीर कबीर ।

फकीर
१४-४-७५

आज तिथि १४ अप्रैल १९७५ से मानवता मन्दिर में मुफत आंखों का अस्पताल (Free Eye Hospital) की नींव पड़ चकी है । यह क्यों ? दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था ।

फक्कर में उतरे सांच फकीरा
सब की करे भलाई

हिसाब किताब में अलग खाता खोल दो । नई इमारत का नाम Free Eye Hospital रख दें ।

फकीर
१४-४-७५

नाम दान

कल मैं ने नाम दान के बारे अपने विचार प्रकट किये थे। आज मैं इस भेद की पूरी व्याख्या कर देता हूं और महात्मा दयाल दास को आदेश देता हूं कि वह किसी स्त्री को नाम जपने की विधि न बताये।

मैं ने लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उन के आग्रह पर यह काम किया है, नाम तो केवल अधिकारी के लिए है, यह काम कोई रीति-रिवाज या हंसी ठट्ठा नहीं है। यह यादि नाम जपने वाले के आचार, व्यवहार और स्वभाव में परिवर्तन नहीं आता तो नाम का क्या लाभ ? असली नाम तो चौथे पद में रहता है, हां जन साधारण सुमिरन ध्यान द्वारा, मन की एकाग्रता से लाभ उठा सकते हैं चाहे वह किसी भी धर्म अथवा पंथ द्वारा बताये गये तरीके से ध्यान करें। संतमत का नाम और चोज़ है। लाखों आदमीयों ने नाम लिया हुआ है कितनों के जीवन बदले ? हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने एक पुस्तक में लिखा है कि मैं नाम दे कर तुरंत शब्द खोल सकता हुं परन्तु यदि जीवन खराब

हो जाए तो मैं जिम्मेदारी नहीं लेता। संतमत के नाम के केवल ये अधिकारी हैं जो अपने जीवन को बनाना चाहते हैं और जन्म मरण के चक्कर से बचना चालते हैं।

मैं नहीं चालता कि मन्दिर से नाम लेने वाले अपने गसत आचार, व्यवहार से पंथ को कफक लगाएं और साथ ही मेरे लिए भी कलंक का कारण बने और संतमत भी बदनाम हो। जो स्त्रियां नाम लेना चाहतो हों उनको अपने पतियों की आज्ञा के बिना यह काम नहीं कगना चाहिए क्यो कि कई बार विचारों में मतभेद के कारण परिवारिक जीवन बर्बाद हो जाते हैं। फिर भी यदि कोई स्त्री नाम लेना चाहें और उसे पति की आज्ञा मेंाप्त हो तो वह कमासपुर वाली माई से साधन सीख सकती है। स्त्री और पुरुष का मेल कैसा ? हजूर दाता दयाल जो महाराज किसी स्त्री को नाम नहीं देते थे। उसके पति को कह देते थे कि वह अपनी पत्नी को युक्ति बता दे।

दीवानों ! नाम मिया नहीं जाता लिया जाता है। मैंने कृषक जो, दयाल दास जी सथवा किसो और आदमो को नाम नहीं दिया, वे ले गए। मैं

गलत गुरुणाई नहीं करना चाहता और न गलत ढंग से मान-प्रतिष्ठा लेना हाहता हूं सब से बड़ा साधन सत्संग है वह बी तब जब आइमी के वचनों को सुने और गुने ।

फकोर

१५-४-७५

हज़ूर परम दयालजी महाराज शारीरिक रूप से २७-३-७५ से अस्वस्थ रहे। अब उन की सेहत में काफी सुधार हो चुका है। आज दिनांक २३-४-७५ को उन की शारीरिक अवस्था सन्तोषजनक है और उन्होंने बीमारी के बाद यह पहला सत्संग दिया है। इसमें बीमारी के समय के अनुभव वर्णन किये है। मानव मन्दिर पढ़ने वालों के कल्याणार्थ प्रकाशित कर रहे हैं।

पात पात को सींचते, वृक्ष को दिया सुखाय।
पात फूल फल न मिला, अन्त रहे पछताय॥
ना सुख देह में प्रान में, ना सुख मन में होय।
ना सुख ज्ञान विलास में, विरला जाने कोय॥
सुख तो है आनन्द में, आनन्द के अस्थान।
ऋषि मुनि भूले देवता, ज्ञान का कर अभिमान॥
आनन्द आनन्द में लखो, आनन्द अपना रूप।
साधन आनन्द का करो, छोड़ भरम का कूप॥
जो है जहाँ ढूण्डो वहां, ढूण्ड के पाओ सार।
राधास्वामी ने कहा, और सकल जंजार॥

राधास्वामी ! मैं २६ दिन बिमार रहा। बिमारी की दशा में ज्ञान ध्यान का यत्न करता रहा मगर सुरत को ऊपर न ले जा सका। आज कुछ अच्छा हूं। घई साहिब ! तुमने कहा है कि मैं कुछ

कहूं तुम टेपरिकार्ड करोगे । तुम इस वाणी को सुनो कि ऋषि मुनि सब भूल गए :

सुख तो है आनन्द में. आनन्द के अस्थान ।
ऋषि मुनि भूले देवता, ज्ञान का कर अभिमान ॥

मैंने जीवन में खोज की । भाग्य सन्तमत में ले गया । मैं क्रियात्मक रूप से हरएक वस्तु को देखने का इच्छुक था । मैं नाक कटो में शामिल नहीं हुआ । जब तक कोई व्यक्ति शरीर में है वह ऊपर की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता । शरीर तीन प्रकार के हैं । शरीर मन और प्रकाश रूपी आत्मा ।

रात को मैं १० बजे से लेकर साढ़े ग्यारह बजे तक सोया उसके पश्चात मुझे नींद नहीं आई और मैं अपने अन्तर में सुमिरन ध्यान और मालिक की खोज में चलता रहा । रात को मेरे अनुभव में आया कि कोई भी हस्ती चाहे वह इस लोक में है या ऊपर के लोकों में है या कोई भी वस्तु है वह अपना वजूद रखती है । चाहे उसकी कोई भी शकल हो उस में तीन वस्तुए अर्थात् त्रिगुणात्मक जगत रहता है । खुदरबीन से नजर आने वाले कीड़े में भी तीन वस्तुएं हैं । हमारे शरीर के अन्तर जितने कीड़े हैं

उनमें भी तीन वस्तुएं हैं। मैंने बहुत शब्द योग किया बहुत अभ्यास किया और बहुत आनन्द लिए। घण्टा, शंख सुना, रारंग सारंग सुना, इनके सुनने से मुझे आनन्द मिला। मगर वह नित्य नहीं रहते। उनमें परिवर्तन आता रहा। तुम समाधी लगाओ, गुरु स्वरूप का ध्यान करो या प्रकाश को देखो इससे तुमको खुशी मिलेगी मगर वह खुशी नित्य नहीं रहेगी मैंने बड़े २ अभ्यासी गिरते देखे।

फिर वह शब्द योग क्या है ? शरीर. मन और प्रकाश से आगे एक अवस्था है। रात को मैंने अनुभव किया पहले भी करता रहा हूं। जो वस्तु हमारे अन्तर में शरीर मन प्रकाश और शब्द की साक्षी है जब तक वह इन तीनों से अलग नहीं होती तब तक वह उस परम सुख को जो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस शब्द में लिखा है कि शब्द योग में सुख है वह सांसारिक दुखों और सुखों से बच नहीं सकती। मैं स्वयं सोचता हूं कि क्या इस अवस्था को हरएक व्यक्ति प्राप्त कर सकता है ? बिलकुल नहीं। मैंने बड़े २ अभ्यासी देखे। मैं स्वयं कितना अभ्यासी हूं मगर बिमारी की दशा में मेरी वह

अवस्था नहीं रही क्योंकि मैं शारीरिक अवस्था को भूल नहीं सकता था। इतने दिनों के बाद रात को मैं शारीरिक अवस्था को भूला हूं। उस समय मुझे पता नहीं था कि मैं फकीरचन्द हू या मैं कौन हूं और कहां हूं। यह जितने भी साधन हैं सहस दल कमल, त्रिकुटि, सुन, महासुन्न या अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष और विज्ञानमय कोष जब तक इनमें हो तुमको खुशी मिलेगी मगर यह सदा नहीं रहैगी। लेकिन सत चित आनन्द मुबारक है। मुझ पर दयालदास, कृषक, कमालपुर वाली माई या और सत्संगी जो मेरा सहारा लेते हैं मुझे उनकी दया से पता लगा। वह मेरे रूप का सहारा लेते हैं और आनन्द लेते हैं। कोई सुमिरन से आनन्द लेता है और कोई प्रकाश से सहारा लेता है मगर यह पराधीनता है। यदि किसी समय किसी के अंतर गुरुस्वरूप प्रकट न हुआ, सुमिरन न बना या अन्तर में प्रकाश न हुआ तो आदमी को सुख या आनन्द नहीं मिलता और वह उदास हो जाता है। उस सुख के लिए हम पराधीन हैं। अब मैं बीमार हूं मेरे शारीरिक सुरत के लिए पण्डित नारायण दास

गोपाल दास या और आदमी जागते रहते हैं इसलिए मैं अपने शारीरिक सुख के लिए इन सबके अधीन हूं।

पराधीन सुपने सुख नाहीं

संसार वालों को सहारा चाहिए मगर सन्त सहारा नहीं चाहते। जो ज्ञान मैंने संसार को दिया है यदि सत्संग द्वारा किसी व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाये तो वह व्यक्ति बिना सहारे के ही अपनी सुरत को अकेला कर सकता है। अपने अकेले पन में ही परम सुख है। इस अवस्था का नाम है चौथा पद

नाम रहे चौथे पद माहीं।
यह ढूण्डे तिरलोकी माँहीं।

सन्तों का मार्ग बहुत ऊंचा है। मैं सोचता हूं कि सन्तों ने इसको प्रकट क्यों किया क्योंकि साधारण लोग यहां तक नहीं पहुंच सकते। इस लिए सन्तमत सब के लिए नहीं है हां! निचली श्रेणियों में जो लोग अभ्यास करते हैं उन को इस से आनन्द मिलेगा। परम आनन्द कहां है? बे सहारा हो जाने में। हो सकता है सन्तमत वाले मुझे पथभ्रष्ट समझें और वह मुझे पथभ्रष्ट समझते भी हैं। उन को अधिकार है।

मैं भारतवर्ष या संसार में पहला फकीर हूं जिस ने अपनी कमजोरियों को संसार के सामने प्रस्तुत किय. । तो फिर क्या करना है ? जिस का तुम साहारा लेते हो उस को यदि तुम तिरलोकी से परे के रहने वाला नहीं समझोगे तो तुम उस वस्तु को या उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकोगे । मेरी सफलता का यही राज है कि मैं ने हजूर दाता दयाल जीं महाराज के रूप में उस परमतत्व आधार को माना । मैं ने हजूर दाता दयाल जी महाराज की पूजा नहीं की, मैं ने उन के रूप में उस वस्तु की पूजा की जिस का उस समय मुझे ज्ञान नहीं था मगर मेरे अन्तर सचाई थी । मैं यह नहीं कहता कि तुम मुझे गुरु मानो मगर जिस को गुरु मानते हो उस को बाबा फकीर, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज या महाराज दशरथ का बेटा राम मत समझो, उस को परम तत्व आधार मानो अन्यथा तुम को वह अन्तिम अवस्था प्राप्त नहीं होगी । सुन रहे हो बलबीर सिंह ! मैं तुम लोगो को फकीर चन्द के जाल में नहीं फंसाना चाहता । हां. अपनी वाणी के जाल में अवश्य फंसाना चाहता हूं । सत्संग की महिमा है ।

क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज अपने सतगुर हजूर महाराज जी को राधास्वामी मानते थे इसलिए तुम भी ऐसा ही किया करो। स्वामी जी ने अपनी वाणी में लिखा है :—

गुरु को ऊपर ऊपर गाता।
गुरु को दिल भीतर नहीं लाता॥
बाहरी लगन करे क्या पाजी।
भीतरी गुरु से लगन न लागी॥

रात के साधन ने मुझे बहुत सुख दिया। अभी तक मुझ में यह कमी है कि शारीरिक कष्ठ के समय मैं अपनी सुरत को आगे नहीं ले जा सकता। बीमारी के इन छब्बीस दिनों २६ दिनों में नहीं ले जा सका। रात को मुझे यह सूरत मिला। इस लिए घई साहिब ! गुरु के रूप को समझो, ध्यान चाहे बाबा चरण सिंह जो का करो या जिस का तुम्हारी इच्छा हो करो जब तक तुम उस रूप को चौथे पद में रहने वाला नहीं समझोगे तुम मनज़ल को नहीं पा सकते। सुमिरन अच्छा होना चाहिए। एक सुमिरन तो मन से होता है सुमिरन का अर्थ है किसी वस्तु को बार-२ याद करना। मेरा अनुभव यह कहता है कि जब तक अपने इष्ट को सर्वाधार या

परमतत्व आधार नहीं मानोगे वह मंजिल मिल नहीं सकती मगर मैं दावा नहीं करता शायद किसी को मिलती हो। हजूर महाराज जी ने स्वामी जी महाराज की इतनी सेवा की कि आजतक किसी चेले ने अपने गुरु की ईतनी सेवा नहीं की। उन्होंने स्वामी जी के थूक खाये, उन के लिए चक्की पीसते रहे। जब स्वयं गुरु गद्दी पर आये तों कहते थे कि मैं गुरु नहीं हुं गुरु राधास्वामी दयाल हैं। उन्होंने अपनी वाणी में लिखा है कि सत्गुरु कौन ? सत्गुरु शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं और उन के चरण प्रकाश हैं।

शरीर मन और आत्मा से परे जो शब्द है अपने अन्तर में उस को सुनो। मैं चाहता हूं कि यह बड़े-२ अभ्यासी अपनी दशा वर्णन करें। किसी सन्त ने बीमारी की दशा में अपनी अवस्था वर्णन नहीं की कि बीमारी के समय उन के साथ क्या गुजरी। सब ने परदा रखा। यदि बाबे फजीर को मानते हो तो उस को अपने अन्तर में सर्वाधार मानो तब तुम को सफलता होगी। लेकिन जो छोटी श्रेणी के आदमी हैं वह बिवश हैं। यदि बच्चा स्कूल में जा कर मास्टर

को जफ्का ही मारता रहे या किताबों पर फूल ही चढ़ाता रहे तो क्या उस को विद्या आ जायेगी ? चले चलो । सुरत तो तुम आप हो, मगर कब ? जब तुम शरीर मन और प्रकाश को छोड़ कर आगे जाओगे । यह मंजल बहुत ऊंची है । अपनी वृति को शब्द में लै करो । असली शब्द तो अटूट **Unbreakable sound** है वही राधास्वामी है और वही तुम्हारा निजनाम है । उस अवस्था को वह प्राप्त कर सकता है जो हेरा फेरी या ४२० नहीं करता और अपने स्वार्थ के लिए किसी को तंग नहीं करता । संसारिक व्यवहार के लिए सब कुछ करो यह माया देश है । बाल बच्चों को अपना कर्तव्य समझ के पालो । लड़ाई के मैदान में सिपाही कितने आदमियों को मार देता है मगर वह अपने स्वार्थ के लिए किसी का वध नहीं करता वल्कि देश के लिए करता है उस को वजाय पाप के पुन्य मिलता है। मैं गृहस्ती हूं।अपने लिए कुछ नहीं लेता दूसरों के लिए हूं । इस का मुझे पाप नहीं है अपनी जातके लिये हेराफेरी मत करो । मैं आप लोगों को भेद और ज्ञान देता हूं और सच्चे दिल से चाहता हूं कि तुम लोगों को शरीरिक, मानसिक और आत्मिक

सुख मिले। शेष रह गई अन्तिम अवस्था, बाहर का गुरू लाख यत्न करने पर भी किसी को कुछ नहीं दे सकता :—

जिस पर दया आद करता की सो यह न्यामत पावे।

यदि बाहरी गुरू के हाथ में होता तो कौन गुरू यह चाहता है कि उस के चेले दुःख उठायें। गुरू ने तो तुम को मार्ग बताना है अमल करना तुम्हारा काम है। खुश रहो घई ! सुखी रहो बलबीर !!

सब को राधास्वामी

Truth Always Wins (सत्यमे जयते) नामी पुस्तक हजूर परम दयाल जी महाराज ने लिखी थी जोकि अंग्रेज़ी भाषा में छप चुकी है।

यह पुस्तक अंग्रेज़ी पढ़े लिखे सज्जन मानवता रन्दिर से बिना मूल्य मंगवा सकते हैं। क्योंकि इस पुस्तक में परम दयाल जी महाराज का निज अनुभव लिखा गया है इस लिये वे ब्राह्मण होने के नाते इसे बेचने की आज्ञा नहीं देते। ब्राह्मण के लिये वेद बेचना महा पाप है। वेद नाम है ज्ञान का और अनुभव का हां यदि कोई चाहे तो मानवता मन्दिर की यथा-शक्ति दान के रूप ने महायता कर सकता है, यह पुस्तक पढ़ कर वापस भी की जा सकती है।

सैक्रेट्री
मानवता मन्दिर

शोक समाचार

बहुत ही दुःखद समाचार है कि दयाल स्वरुप नन्दू भाई जी निज़ामाबाद (आंध्र प्रदेश) निवासी चोला छोड़ गये आप महर्षि शिव व्रत लाल जी के गुरुमुख, महान् अनूभवी महापुरुष, सच्चे सन्त, राधास्वामी मत के आचार्य और लाखों सत्सगियो के राहवर थे आपने मासिक पत्र "दयाल" की स्थापना की जो ४० वर्ष से सफलता से छप रहा है। उनके चले जाने से मानवता मन्दिर के ट्रस्टियों सदस्यों और कर्मचारियों को गहरा आघात लगा है। हम सब दाता से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार व अन्य सम्बधियों को यह वियोग सहने की शक्ति दे।

दुर्गादास
प्रेज़ीडेंट फकीर लाईब्रेरी
चैरिटेबल ट्रस्ट

तलाश और उस का परिणाम

भाग तीसरा

[illegible]

[illegible]

सूचना

मानव मन्दिर का मैंने कोई मूल्य नहीं **रखा**। क्यों मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। मैंने जो कुछ समझा और अनुभव किया वह किसी धर्म या पन्थ के धर्मग्रंथों से नहीं लिया। यह मेरा निज अनुभव है। क्योंकि निज अनुभव का नाम ही ज्ञान है, मैं अपने ज्ञान को बेचता नहीं। तुलसीदास जी ने रामायण में भरत की जबानी यह ख्याल जाहिर किया है कि ब्राह्मण के लिए वेद का बेचना महापाप है। वेद नाम है ज्ञान का। इस पत्रिका के पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं यह हाथ जोड़ कर पढ़ने वालों से प्रार्थना करूंगा कि अगर किसी को इसके पढ़ने में रुचि न हो और जीवन को नियमबद्ध बनाने की जरूरत न हो या इन मेरे विचारों से किसी को सन्तुष्टि, उत्साह, खुशी और शान्ति न मिलती हो तो वह मानव मन्दिर को न मंगवाए और जो मंगवा रहे हैं अगर लिख दें तो हम न भेजें। अगर कोई यह समझता है कि मेरे इस काम से किसी को फायदा पहुंचता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करे ताकि यह काम जारी रखा जाय।

पत्र व्यवहार में मानव मन्दिर का क्रमाँक नं० जरूर दिया करें।

फकीर

Regd. No. 26265/74

MANAV MANDIR

P—Hsp—7.

ADDRESS

To

1283

Shri A Hanumanth Rao

H.No: — 10-3 194/8

Humayun Nagar

Hyderabad (A.P)

-28-

500028

From :

MANAVTA MANDIR

SUTEHRI ROAD,

HOSHIARPUR.